तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : २१ वर्ष : १८ १-१४ नवम्बर १९८२
दीवाना

पंचतंत्र

अरे रीछपाल, तुमने यह क्या भेष बनाया है। सिर पर क्या पहन रखा है। फौज में भर्ती तो नहीं हो गये हो या गवर्नर बन गये हो? मैंने ऐसी अजीब टोपी आज तक नहीं देखी।
यह कुक की टोपी है गिलहरी।
कुक की टोपी, तुमने कुक से छीनकर पहनी है? दूसरों की चीज छीनना अच्छा नहीं है।

तू नहीं समझेगी। कुक का मतलब है खानसामा।
खानसामा?
खानसामा होता है, खानसामा।
मुझे तो डर लग रहा है।
खानसामा क्या खाता है? नाम तो बड़ा खाऊ है।
तुझे मैं अच्छी तरह समझाऊंगा कि उस टोपी का रहस्य क्या है। मान ले आज हम आउटडोर पिकनिक पर हैं। यहीं खाना खायेंगे। तेरी खोह में जितने बादाम, अखरोट और जितनी भी दूसरी गिरियां हैं निकालकर ले आ और तमाशा देख।

बता तो दे कि कैसा खाना बना है मजा भी आ रहा है या नहीं?
मजा आ गया। मैंनै जिन्दगी में कभी ऐसे पकवान नहीं खाए। बादाम का हलवा तो कमाल का ही है। अखरोट वाला फ्रूट केक लाजवाब है। बादाम रोगन जोश तो अंगुलियां चटा देता है। फ्रूट वाला कराची हलवा भी अच्छा बना है। पिस्ते वाला पुलाव अहा! अहा! आज तो पेट फट जाएगा।

सारी कुकिंग खाने के बाद गिलहरी की आंखें खुल गयी होंगी। अब उसे महसूस हो गया होगा कि मैं कितना बड़ा चैफ बन गया हूं। हा।

पेट तो फुल हो गया गजब का खाना बनाया रीछपाल ने। लेकिन उसने ठीक तरह बताया नहीं कि उसने वह अजीब तरह की टोपी क्यों पहन रखी थी...बातों-बातों में और खाना बनाने में बताना भूल गया होगा मैं भी पूछना भूल गयी।
शिक्षा—जब पेट ज्यादा भरा होता है तो अ
सुस्त हो जाती है।

मन प्रकाशन की अनुपम भेंट
भारत में पहली बार
केवल "सन मैगजीन" में धारावाहिक प्रकाशित होने वाली

आक्सा

की कहानी अब रंगों से भरपूर हिन्दी व अंग्रेजी में
पुस्तक के रूप में

सुन्दर फुर्तीली, साहसी लड़की आक्सा की कहानी प्रतिक्षण एक नये उत्साह से भरपूर।

आक्सा शक्तिशाली दुष्ट व्यक्तियों, अजीबो-गरीब जीवों की चालबाजी और विनाश की योजनाओं से लड़ती है।

आक्सा कॉमिक जो सन मैगजीन के लाखों पाठकों का पिछले चार वर्ष से मनोरंजन करती आ रही है। और भारत में केवल सन मैगजीन में ही पढ़ी जा सकती है अब पाठकों की सुविधा के लिये कॉमिक पुस्तक के रूप में हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित की जा रही है। इस धारावाहिक कहानी की एक पूरी कहानी इस रंगीन पुस्तक में दी गई है। इसको अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से मांगिये।

आक्सा कॉमिक अपने लिये खरीदिये और उसका मजा उठाइये।

मूल्य एक प्रति केवल तीन रुपये।

अपने पुस्तक विक्रेता से हिन्दी या अंग्रेजी में सन कॉमिक की आक्सा की प्रति सुरक्षित कराइये।

दीपावली विशेषांक (हर पृष्ठ पर नई दीवानगी लिये)

- दीवाली पर फालतू खर्च बचाने के दीवाने तरीके
- लक्ष्मी जी की माया कहीं धूप कहीं छाया
- गल गलगल बम दीवाली भप्पी लहरी स्टाइल • जूआ चक्रम
- आतिशबाजी के सामान के कुछ नये डिजाइन
- दिवालिया होने पर क्या करें? • दो नम्बर की लक्ष्मी

और साथ ही सभी स्थाई स्तम्भ

सिलबिल-पिलपिल, फैण्टम, राजा जी, चिल्ली लीला, बन्द करो बकवास, मदहोश, बोलते अक्षर, क्यों और कैसे, गरीब चन्द की डाक, आपके पत्र, खेल-खेल में, नई फिल्म का संपूर्ण ड्रामा, वर्ग पहेली और हंसा-हंसाकर पेट में बल डाल देने वाले नये-नये चुटकुले। इनके साथ ही पढ़ने को मिलेंगी हास्य-व्यंग्य की नई-नई कहानियां और अन्य नये फीचर।

इतनी सामग्री आपको किसी अन्य एक ही पत्रिका में एक साथ नहीं मिल सकती। यही कारण है कि लाखों परवानों का दीवाना बच्चों, युवकों और बूढ़ों में एक समान लोकप्रिय है।

एजेण्ट से कह कर अपनी कापी अभी से सुरक्षित करा लीजिये।

एजेन्टों से अनुरोध ———— **अपनी बढ़ी हुई प्रतियों के लिये आज ही लिखिये। नये स्थानों पर एजेंसियों के लिये इस पते पर लिखें—**

The Central News Agency, 4-E/4, Jhandewalan Extension, New Delhi.

बढ़े हुये पृष्ठ **मूल्य केवल २.०० रुपये**

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : कोई अधूरा काम बनने की आशा है जिससे आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा, खुशी एवं उत्साह बढ़ेगा, सप्ताह पहले से अच्छा है, कुछेक उलझनों के बावजूद भी हालात में सुधार जारी रहेगा।

वृष : स्थायी काम-धन्धों से लाभ की प्राप्ति होती रहेगी, परन्तु व्यय की अधिकता मन परेशान रखेगी, मेहनत का फल देर से मिलेगा, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, यात्रा सावधानी से करें।

मिथुन : सप्ताह मिश्रित फलों से युक्त है, कुछ गम्भीर या देर से चली आ रही समस्यायें सुलझती दिखाई देंगी, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, आर्थिक संकट दूर होने लगेगा।

कर्क : नया काम शुरू करना अभी ठीक नहीं, स्थायी काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, किसी सज्जन पुरुष के सहयोग एवं परामर्श से कोई भारी संकट टल जाएगा।

सिंह : इन दिनों संघर्ष काफी रहेगा, रुकावटों का सामना होगा फिर भी मेहनत से काम लेने पर कामों में सफलता मिलती रहेगी, कोई विशेष सूचना मिलेगी, व्यापार से यथार्थ लाभ होगा।

कन्या : काम-काज में उन्नति के अवसर मिलेंगे, प्रयास करने पर सफलता मिल जायेगी लेकिन मिलेगी कुछ देर से, धन व्यय काफी होगा, आर्थिक तंगी का सामना लेकिन शीघ्र ही दूर हो जाएगी।
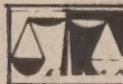
तुला : यह सप्ताह तकरीबन अच्छा रहेगा, काम-काज में उन्नति होगी और लाभ भी पहले से अच्छा होने लगेगा सफलता के मार्ग में कुछ रुकावटें तो आयेंगी लेकिन शीघ्र ही दूर हो जायेंगी।

वृश्चिक : किसी विशेष काम पर खर्च करना पड़ेगा, परिश्रम द्वारा सफलता मिलेगी, यात्रा अचानक ही करनी पड़ेगी जो सफल रहेगी, किसी बन्धुजन से मन-मुटाव या चिन्ता बनेगी।

धनु : किए कामों के शुभफल प्राप्त होने लगेंगे और कठिनाइयां भी धीरे-धीरे समाप्त होती जायेंगी, दौड़-धूप काफी रहेगी, कारोबार ठीक चलेगा और लाभ भी अच्छा होने लगेगा।

मकर : कोई नई समस्या या उलझन पैदा होगी, अकारण वैर-विरोध से मन परेशान, व्यर्थ के कामों पर खर्च अधिक होगा, परिवार से सुख, यात्रा सफल रहेगी, सेहत का खास ध्यान रखें।

कुम्भ : सप्ताह पहले से कुछ अच्छा रहेगा, कई महत्वपूर्ण तबदीलीयां देखने में आयेंगी, कारोबार में भी सुधार होता जाएगा, कोई विशेष या शुभ खबरी मिलेगी, किसी प्रियजन से मन-मुटाव।

मीन : प्रयास करने पर सफलता मिलेगी भले ही कुछ देर से मिले, आमदनी पहले से अच्छी किन्तु खर्चा भी काफी होगा, मित्र साथ देंगे, कारोबार सुधरेगा, विरोधी मुंह की खायेंगे।

दीवाना का झूमता, मुस्कराता नया अंक 17, बहुत जल्द मिल गया। बेहद सुन्दर अंक था। अनेकों स्थाई स्तम्भों तथा नए स्तम्भों ने हंसा-हंसा कर पेट में दर्द ही नहीं करा बल्कि खलबली मचा दी। बड़े ताज्जुब और गौरव की बात है कि दीवाना हास्य पत्रिकाओं में सर्वोपरि स्थान रखते हुए भी सबसे कम कीमत में मिलता है। सम्पादक जी, आप वाकई धन्यवाद के पात्र हैं। नए अंक के/इन्तजार में।

—वेद प्रकाश श्रमित, घोंडा चौक, दिल्ली

दीवाना का अंक नं० 17 प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ से लेकर 'दीवाना चिपकी' तक सभी मजेदार था। खासकर के फीचर 'फिल्मी टाइटल' बहुत पसन्द आया। 'लेडीज टैंक' के लिखने वाले को मैं व्यक्तिगत रूप से बधाई देना चाहता हूं। कृपया हर फीचर के अन्त में फीचर बनाने वाले का नाम दिया कीजिए।

—एन० एस० भाटिया, सूर्य लंका

दीवाना का अंक 18 काफी इन्तजार करने के बाद प्राप्त हुआ! मुखपृष्ठ देखकर हँसी आ गई! इस अंक की सभी कहानियां व अन्य लेख सराहनीय थे! कहानी 'नई फिल्म', 'मरवा डाला फिल्मी फार्मूलों ने, 'बाजी' पढ़कर दिल बाग-बाग हो उठा! 'गरीब चन्द की डाक' के प्रश्न उत्तर काफी रोचक लगे! लेकिन 'आपस की बात' न पाकर मन को काफी दुख पहुंचा! फिल्मी ड्रामा 'धर्म कांटा' पढ़कर 'दीवाना' ने मुझे सचमुच ही दीवाना बना दिया। अगर इस फिल्मी ड्रामा में और भी चित्र दिये जाते तो यह और रोचक बन जाता! 'क्यों और कैसे' भी काफी ज्ञानवर्धक रहा! अगले अंक की इन्तजार में…

शिवचन्द्र खुराना — लुधियाना

दीवाना अंक 18 मिला। बड़ा ही मजा आया। इस अँक में 'अच्छी बात तो यह है', 'सिलबिल पिलपिल', 'प्रेम लीला पर प्रभाव', 'जानवर जिनके अस्तित्व को खतरा है' पसन्द आये। हास्य व्यंग्य 'और हमें खबर न हुई' अच्छी लगी।

किशोर माथुर—अजमेर

दीवाना अंक 18 मिला। यह अंक बहुत अच्छा लगा, क्योंकि इस अंक में नई फिल्म और मरवा डाला फिल्मी फार्मूलों ने, कहानी बहुत अच्छी थीं। अन्य स्तम्भ भी बहुत-बहुत प्यारे लगे। लल्लू, राजा जी, सिलबिल पिलपिल, बन्द करो बकवास, मदहोश, जानवर जिनके अस्तित्व को खतरा है पढ़ने पर तो दिल बाग-बाग हो गया। आप से अनुरोध है कि किसी निकटतम अंक में 'अमिताभ का पोस्टर देने की कृपा करें।

—विजय चावला, दरियागंज, दिल्ली

मुख पृष्ठ पर

बचत ऊर्जा की करो
खेलकूद के साथ
चिल्ली सोचे दूर की
कहने की क्याबात।

दीवाना

अंक : 21 वर्ष : 18 1-14 नवम्बर 1982

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

'व्यंग्य कथा'

नर्कलोक में विद्रोह

—संजय कुमार श्रीवास्तव 'सरल'

और फिर यमराज की आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं ! वे अवाक्-

से, ठगे-ठगे-से खड़े ही रह गये ! कारण था—पापियों को जलाने और उबालने के लिए बनाये गये अलाव ठण्डे पड़े थे। कड़ाह इधर-उधर लुढ़के हुए थे। इतना ही नहीं, यमदूत नवागंतुक पापियों के साथ गपशप कर रहे थे।

यमराज नए आये हुये पापियों का निरीक्षण करने के लिए 'राउण्ड' मार रहे थे। यह सब देखकर उनकी भृकुटि तन गईं।

वे चुपचाप अपने 'आफिस' की ओर चल पड़े। रास्ते में वे सोचते जा रहे थे कि आखिर आज ऐसा क्यों है ?

यमराज और उनके भैंसे को आता देखकर 'गेट कीपर' ने झट से 'आफिस' का 'मेन गेट' खोल दिया।

'आफिस' पहुंचकर यमराज महोदय अपनी 'रिवाल्विंग चेयर' पर विराजमान हो गये। कुछ देर बाद उन्होंने 'काल-बेल' बजाई।

तुरन्त ही एक चपरासी हाजिर हो गया।

'क्या है सर ?'

यमराज ने आदेश दिया, ''हैड यमदूत' को हमारे सामने पेश करो। ऐट वन्स। देर नहीं होनी चाहिए !'

कुछ देर बाद 'हैड यमदूत' यमराज के आगे उपस्थित हो गया।

'क्या बात है सर ? आपने मुझे क्यों बुलाया है ?'

यमराज 'हैड यमदूत' की ओर मुड़े। बोले, 'यह सब क्या हो रहा है ?' उन्होंने गरजते हुए कहा, 'सारे काम-काज बन्द क्यों हैं ? जबाब दीजिये।'

'हैड यमदूत' कुछ देर चुप रहा। थोड़ी देर बाद उसने धीरे से उत्तर दिया, 'सर ! आज जो नये पापी आये हैं, वे आपसे कुछ निवेदन करना चाहते हैं। उन्हीं के अनुनय-विनय पर हम लोगों को आज की कार्यवाही रद्द करनी पड़ी।'

'ठीक है, उन्हें भेज दो।' यमराज ने कहा।

जब 'हैड यमदूत' बाहर चला गया, तो यमराज ने पुनः 'काल बेल' बजाई। दूसरा चपरासी हाजिर हो गया।

'नये पापियों के लेखे-जोखे का रजिस्टर लाओ,' यमराज ने आदेश दिया।

कुछ देर बाद चपरासी घबराया हुआ आया। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। नये पापियों के लेखे-जोखे का रजिस्टर गायब था !

'सर ! रजिस्टर गायब है !' चपरासी ने अपनी फूलती हुई सांसों पर नियंत्रण करते हुए बताया।

'क्या ?' यमराज जैसे आसमान से धरती पर गिर पड़े। उनकी आंखें सोचने-विचारने वाले अन्दाज में सिकुड़ गईं।

वे कोई निर्णय लेते, इसके पहले ही नये पापियों का 'लीडर' यमराज के सामने प्रस्तुत हो गया। यमराज चौंके। कारण था—नये पापियो के लेखे-जोखे वाला रजिस्टर उसके दाहिने हाथ में था।

उसने रजिस्टर को यमराज की टेबिल पर रख दिया।

'सर ! मैं नये पापियो का लीडर हूं।' दोनों हाथों को जोड़कर उसने यमराज को नमस्कार करते हुये अपना परिचय दिया, 'सर ! मुझे पता चला है कि आपने मुझे याद किया है। इसलिये सुनते ही आपकी सेवा में उपस्थित हो गया। बताइये क्या आज्ञा है ?'

उसके स्वर की नर्मी से यमराज कुछ नम्र पड़ गये। वे बोले, 'हमने सुना है कि आप लोग कुछ कहना चाहते हैं ?'

'हां, सर ! आपने ठीक ही सुना है !' उसने उसी प्रकार हाथ जोड़कर कहा, 'सर ! महंगाई के समय में वैसे भी चीनी और मिट्टी के तेल के मिलने की परेशानी किसी से छुपी नहीं है। हमारा कहना सिर्फ यही है कि हमें उबालकर और जलाकर इस महंगाई के युग में इतना ज्यादा मिट्टी का तेल और ईंधन 'वेस्ट' करने की क्या जरूरत है ?'

'यह ऊपर का आदेश है ! हम कुछ नहीं कर सकते !' यमराज ने कहा, 'हम मजबूर हैं, ऐसा करने को !'

'सर ! आपका उद्देश्य क्या है, जो आप हमें इस तरह के कष्ट देते हैं ?'

'हमारा उद्देश्य तुम्हें शुद्ध करने का है ! तुम्हारी आत्मा में बसी हुई बुराइयों को नष्ट करके हम तुम लोगों की आत्मा को स्वच्छ कर देते हैं।'

शेष पृष्ठ ८ पर
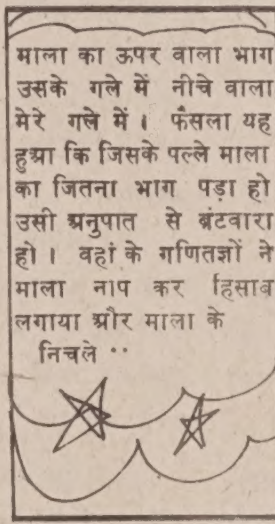
माला का ऊपर वाला भाग उसके गले में नीचे वाला मेरे गले में। फैसला यह हुआ कि जिसके पल्ले माला का जितना भाग पड़ा हो उसी अनुपात से बंटवारा हो। वहां के गणितज्ञों ने माला नाप कर हिसाब लगाया और माला के निचले ··

पृष्ठ ६ से आगे

'सर ! आपका उद्देश्य हमारी शुद्धि करने का ही है न ?'

'बिल्कुल ! इसमें क्या शक है !'

'तो फिर सर ! हम लोग अब तक की, की हुई गलतियों और पापों की माफी चाहते हैं ! विश्वास कीजिए सर ! अब हमारा हृदय बिल्कुल साफ है सर !'

यमराज एक क्षण को अवाक् रह गये। पापियों के लीडर की बात उन्हें उचित प्रतीत हो रही थी।

वे थोड़ा नर्मी भरे स्वर में बोले, 'लेकिन भाई, हम स्वतन्त्र नहीं हैं ! हमें भगवान के निर्देशों और आदेशों के अनुसार ही सभी काम करने पड़ते हैं। हमें इन कामों की प्रतिदिन 'रिपोर्ट' भेजनी पड़ती है !'

मृत्युलोक से आया हुआ नये पापियों का लीडर हंस पड़ा, 'सर ! आप बड़े भोले हैं ! 'रिपोर्ट' तो सिर्फ 'पेपर वर्क' है ! आप 'रिपोर्ट' भेज दीजिए कि सारे पापियों को शुद्ध कर दिया गया है।'

यमराज को यह योजना तो बहुत पसंद आई, क्योंकि इस तरह बेकार की जांच-पड़ताल से बचा जा सकता था, लेकिन वे हिचकिचाये, 'कहीं भगवान को पता चल गया, तो.........'

यमराज के चेहरे पर उतार-चढ़ाव को देखकर पापियों का लीडर मन ही मन प्रसन्न हो गया। वह समझ गया कि यमराज की सहमति है, लेकिन वे हिचकिचा रहे हैं।

वह मुस्कराया, 'आप भी कैसी बातें करते हैं सर ! भगवान और उनके सारे 'फ्रेन्ड' तो नर्क की गंध भी नहीं पसन्द करते ! फिर वे यहां आयेंगे क्यों ?'

यमराज की बात जंच गई। उन्होंने सहमति में अपना सर हिलाया, 'ठीक है, हमें तुम्हारी बातें मंजूर हैं।'

और फिर ? रजिस्टर आग की भेंट कर दिया गया।

यमराज बोले, 'हम तुम्हारे विचारों से सहमत हैं और हम तुम्हारी बातों की कद्र करते हैं।'

पापियों के लीडर को भला और क्या चाहिए था ? उसे तो मनचाही मुराद मिल गई थी ! फिर भी अपनी खुशी को छिपाते हुए उसने कहा, 'थैंक यू सर ! रियली यू आर ये ग्रेट पर्सन !' (धन्यवाद, सर ! वास्तव में आप एक महान् पुरुष हैं !)

यमराज ने आदर सहित पापियों के लीडर को विदा किया। उसके जाने के बाद यमराज ने फोन उठाकर अपने सेक्रेट्री को आदेश दिया, 'पापियों और उनके नये लीडर के ठहरने की व्यवस्था 'गेस्ट हाउस' में करो। अच्छे ढंग से उनके रहने-खाने की व्यवस्था होनी चाहिए।'

नये पापियों के चैन की बंशी बजने लगी। योजना के अनुसार रोजाना 'झूठी रिपोर्ट' भेजी जाने लगी। नर्क लोक में सभी कार्यकर्ता आराम से खर्राटे लेने लगे।

ठीक एक सप्ताह बाद अपने साथियों सहित पापियों का वही 'लीडर' फिर यमराज की सेवा में उपस्थित हुआ।

'क्यों, क्या बात है ?' यमराज ने पूछा।

'सर ! क्या आप हमारे कुछ सुझाव मानेंगे ? वैसे इसमें आप ही का फायदा है सर !' पापियों के लीडर ने कहा।

'सर ! हमारा सुझाव है कि आप नर्कलोक को 'स्वतन्त्र राज्य' घोषित कर दीजिए !'

'क्यों ?' यमराज चौंके।

'देखिये, सर। आप अनंत वर्षों से पापियों को मृत्यु और दण्ड देने का इतना गन्दा काम कर रहे हैं। फिर भी, आप आज तक वहीं हैं, जहां पहले थे। जरा देवताओं को देखिए। मजे से वीणा बजाते हैं, अप्सराओं के नृत्य देखते हैं और मजे की जिंदगी गुजारते हैं। आखिर यह भेदभाव की नीति अनुचित और अन्यायपूरित नहीं है सर ?'

एक-एक शब्द यमराज के हृदय को तीर की तरह बेध गया। पापियों के लीडर की बात उन्हें शत-प्रतिशत उचित लगी।

और फिर वही हुआ, जो पापियों का लीडर चाहता था। यमराज के मन में शासन-लिप्सा जाग उठी। उन्होंने नर्कलोक को 'स्वतन्त्र राज्य' घोषित कर दिया। मानव-खोपड़ी और उसके नीचे गुणा के रूप में लगी दो हड्डियों का 'क्रास' राज्य का ध्वज घोषित किया गया।

पूरा नर्क लोक 'लाउड स्पीकरों' के शोर से भर गया। यमराज ने पापियों के लीडर को नर्कलोक का 'मुख्य मंत्री' बना दिया। 'लीडर' को 'सर्वाधिकार' प्रदान किए गये।

और इन सब कामों के बाद एक 'राजदूत' के द्वारा भगवान के पास खबर भेज दी गई, 'हम नर्कलोक वासी अब पूर्णतया स्वतन्त्र हैं। अब हम पर तुम लोगों की 'हुक्मबाजी' नहीं चलेगी।'

यह खबर सुनकर स्वर्ग में हलचल मच गई। देवता भागे-भागे भगवान विष्णु के पास पहुंचे।

एक 'गुप्त मीटिंग' हुई। तमाम विचार-विमर्श के बाद भगवान विष्णु ने एक 'गुप्त योजना' तैयार की। अपनी योजना सभी देवताओं को बताकर भगवान विष्णु गरुड़ पर सवार होकर नर्कलोक की ओर चल पड़े।

उस रात नर्कलोक में खूब जोर-शोर से 'पार्टी' आयोजित हुई। खूब शराब छलकी। यमदूत और मनुष्य सभी पी-पीकर मस्त हो गये। नशे की अधिकता के कारण सभी नींद की बोझिलता से एक-दूसरे पर लुढ़के जा रहे थे।

ऐसे में 'छम्म्-छम्म्' करती हुई, इठलाती हुई, कमर को लचकाती हुई, पायल को खनकाती हुई एक परम सुन्दरी अचानक—न जाने कहां से सभा में प्रविष्ट हुई। सभी की बंद पलकें खुल गईं। नशा गायब हो गया। सभी लोग उस परम सुन्दरी को निहारने लगे।

सभी की बेधती निगाहों से बेखबर,

बिना किसी की ओर ध्यान दिए वह सुंदरी पापियों के लीडर के पास पहुंची। बड़ी अदा के साथ वह सुंदरी लीडर के आगे रखे हुए मदिरा-पात्र को उठाने के लिए झुकी।

मदिरा-पात्र को मदिरा से भरकर सुंदरी ने लीडर के होंठों से लगा दिया।

एक परम सुंदरी के कोमल हाथों का सुधा-पान। भला ऐसा स्वर्ण-अवसर जीवन में बार-बार आता है? अपना 'अहो भाग्य' समझकर लीडर ने एक ही सांस में मदिरा-पात्र को खाली कर दिया।

एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद चौथा, चौथे के बाद······इसी तरह उस सुन्दरी ने लीडर को मदिरा पिलाना आरम्भ किया। मदिरा पिलाते-पिलाते ही उसने लीडर से कहा, 'नरश्रेष्ठ?' तुम बड़े मंद-बुद्धि हो।'

'क्या? कैसे? क्यों?' नशे में झूमते हुए लीडर ने लड़खड़ाती आवाज में एक साथ ही तीन प्रश्न किये।

'मेरा नाम जानते हो नरश्रेष्ठ।' कानों में शहद घोलने वाली मीठी आवाज में सुंदरी ने प्रश्न किया।

'ऊं-हूं,' लीडर ने इंकार में सिर हिलाया।

'मेरा नाम सुंदरी है नरश्रेष्ठ?'

'वो तो सामने ही है।'

'नरश्रेष्ठ। तुम बहुत सुंन्दर हो। मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूं।' सुन्दरी ने लीडर की ओर चालाकी भरा जाल फेंका, 'लेकिन इसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा नरश्रेष्ठ।'

'विवाह।' लीडर का नशा हिरन हो गया। सुंदरी के गले में अपनी बाहें डालकर वह उठ खड़ा हुआ।

'सुंदरी? मुझे जल्द बताओ वह काम?'

'देखो, यहां वास्तव में बुद्धिमान तुम्हीं एक हो? तुमने यमराज को सिंहासन पर बिठाकर गलत किया है? सिंहासन पर तो तुम्हें ही बैठना चाहिए नरश्रेष्ठ। वास्तव में सिंहासन के अधिकारी तो सिर्फ तुम ही?'

'तुम ये क्या कह रही हो सुन्दरी।'

'मैं ठीक ही कह रही हूं नरश्रेष्ठ। यमराज से सिंहासन छीन लो। सारी सत्ता तुम्हारे हाथों में हो जाये, फिर हम दोनों शादी करके आराम से जिंदगी भर मौज करें।'

लीडर को सुंदरी की बात जंच गई।

अपने साथियों के साथ लीडर यमराज के निवास-स्थान पर पहुंचा। महल के चारों ओर घेरा डालकर लीडर यमराज के आगे खड़ा हो गया।

यमराज भी नशे में थे। लड़खड़ाती आवाज में बोले, 'कहो, भाई? क्या बात है? ऐ?'

लीडर कुटिलता से मुस्कराया, 'बात ये है कि हम लोग चाहते हैं कि अब आप इस कुर्सी को छोड़कर हट जाइये। इस कुर्सी पर अब हम बैठना चाहते हैं।'

यमराज का नशा गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गया। वे बोले, 'मैं यह कुर्सी नहीं छोड़ सकता।'

लीडर हंसा। अपने बगल खड़े एक साथी की ओर इशारा करके वह बोला, 'यह मेरा पक्का साथी है। यह 'मैथ' का 'थर्ड डिग्री एक्सपर्ट स्टूडेंट' रहा है। आप सिंहासन क्या नर्क लोक भी छोड़ने के लिए तैयार हो जायेंगे।'

यह कहकर लीडर ने अपनी बेल-बाटम की जेब से एक रिवाल्वर निकाल लिया। कुटिलता से मुस्कराते हुए यमराज की ओर तानकर उसने यमराज से पूछा, 'इसे पहचानते हैं आप?'

'य···य···यह क्या है?' यमराज घबरा गये। उनके माथे पर पसीना छलछला आया।

'यह है आग उगलने वाली मशीन यानी कि रिवाल्वर। और इसमें से एक साथ छह गोलियां निकलती हैं।'

'इसे द···द—दूर ही रखो। म—म—मैं यह कुर्सी—छ—छ—छोड़ रहा हूं, 'यमराज कुर्सी से नीचे उतरकर भागते हुए चिल्लाये, 'हे प्रभु। दौड़ो, रक्षा करो।'

उसी समय आकाश में पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ी। सभी ने देखा कि गरुड़ पर बैठे हुए भगवान विष्णु हाथ में सुदर्शन-चक्र लिए आकाश-मार्ग से प्रकट हुए।

सुदर्शन-चक्र पर दृष्टि पड़ते ही सभी पापी साष्टांग दण्डवत की मुद्रा में पेट के बल जमीन पर लेट गये।

'कहिए, क्या हाल-चाल हैं?' भगवान विष्णु व्यंग्य से यमराज की ओर देखकर मुस्कराये।

यमराज ने विष्णु के पैर पकड़ लिए, 'प्रभु। मैं अपनी राह से भटक गया था। मुझे क्षमा कर दीजिए, प्रभु?' प्रलाप करते हुए यमराज बोले।

भगवान विष्णु ने यमराज को 'अभय दान' दिया। यमदूतों को आदेश देते हुए भगवान विष्णु बोले, 'सभी को बन्दी बना लो। एक भी भागने न पावे।'

यमदूतों ने पल भर में ही लीडर सहित पापियों को बन्दी बना लिया।

पापियों का लीडर अपने एक साथी से बोला, 'मुझे तो लगता है कि जिस सुंदरी ने हमें यह 'आइडिया' दिया था, वह भगवान विष्णु ही थे। वे पहले भी सुंदरी का रूप धारण करके 'भस्मासुर' और 'नारद' को धोखा दे चुके हैं। ये कूटनीति के पुराने माहिर हैं। इनसे पार पाना सचमुच ही मुश्किल है।'

और फिर? यमदूत दौड़-दौड़कर अलावों को ईंधनों द्वारा प्रज्वलित करके, उन पर कड़ाहें चढ़ाने लगे।

दूसरे दिन स्वर्गलोक से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'दैनिक स्वर्ग-लोक टाइम्स' में समाचार प्रकाशित हुआ:

'नर्कलोक के सभी काम पूर्ववत् चालू हैं। नर्क लोक में होने वाले विद्रोह की कहानी अब समाप्त हो चुकी है। विद्रोह पर काबू पा लिया गया है। गड़बड़ी होने की कोई आशंका नहीं है, फिर भी सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक सुरक्षा दल तथा सेना के नौजवान तैनात हैं।

●

सिलबिल पिलपिल
सैन्टम

भाइयों, बहनों और साथियों, आपको याद होगा कि बहुत दीवाना पीछे दो बार सिलबिल ने सैन्टम सुपरमैन बनकर हैरत अंगेज कारनामे कर दिखाये थे जिसे पढ़कर आप लोगों ने दांतों में अपनी दसों अंगुलियां दबा ली थीं और कई पाठकों के तो पत्र आये थे कि आधी अंगुलियां चबा ली थीं। अब जनता की भारी मांग पर अपना याडो फिर सैन्टम बनकर दीन दुखियों की फ्री सेवा में अपना कीमती जीवन लगाना चाहता है।
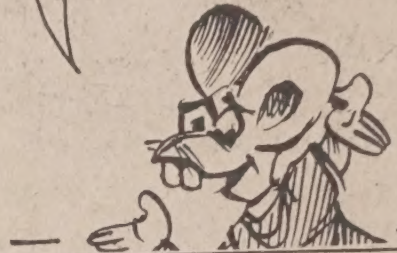
अपना सैन्टम किसी भी सूरत में असली फैन्टम से घट नहीं है। इसमें वह सारी विशेषतायें मौजूद हैं। इसके अलावा हमने इसमें विटामिन ए और डी खास तौर से ज्यादा पौष्टिक बनाने के लिए मिलाया है। इस बार सिलबिल ने सैंटम बनने की खूब तैयारी करी है। दर्जनों डिब्बे प्यूट्रामूल के साफ कर दिये हैं। फैंटम भाला मार कर शेर को मार गिराता है क्योंकि भारत में शेरों को मारने पर पाबन्दी है। इसलिए याड़ो को किचन में काकरोचों पर निशाना लगाने की प्रैक्टिस करनी पड़ी—
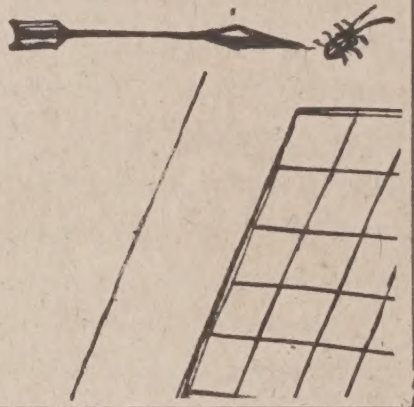
आपको पता ही होगा कि शेर बड़ा जानवर है उस पर निशाना लगाना आसान है। लेकिन काकरोच छोटा जानवर है फिर भी अपना याड़ो सौ में से दो-तीन निशाने तो सही लगा ही लेता है। दुनिया में यह पहला १५१ मार्के सुपरमैन है। आप लोग भी अपने दोस्तों व रिश्तेदारों में इसका प्रचार करना। यह बड़े काम का सुपरमैन है। सुपरमैनों के सारे करतब करने के बाद आप इसे ओवर टायम दें तो यह छोटे-मोटे दूसरे काम भी कर देगा जैसे मक्खी, मच्छर मारना, झाड़ू, पौंचा लगाना, सिगरेट लगाने के लिए माचिस देना वगैरह-वगैरह।

मिल गया पहला केस हमें। टीटानगर के राजे के फील खाने का शाही हाथी पागल हो गया है और महावत को मार कर जंगल में भाग गया है।

असली फैण्टम घोड़े पर जाता है तो क्या। हम इतने पिछड़े हुये नहीं हैं। हम स्कूटर पर जायेंगे। फैंटम हरिजनों और अनुसूचित जाति वालों का सुपरमैन है। सैंटम स्कूटर युग का आल राऊंडर सुपर मैन है। कपिल देव के प्रदेश का ही है यह।
RATTTTT
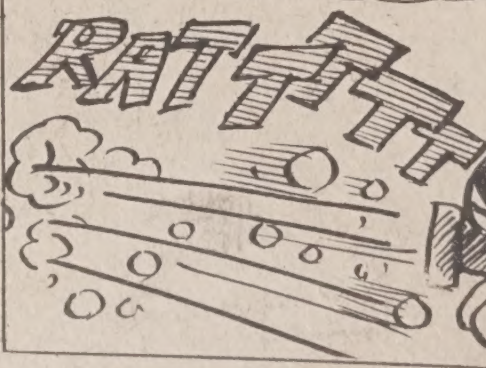
महल तो बड़ा शानदार है टीटा नगर के महाराजा का। इतना शानदार है कि मेरी तो अन्दर जाने की हिम्मत ही नहीं पड़ रही है।
तुमको यह नहीं भूलना चाहिए कि तू अब सैन्टम है। तुझे कोई कहीं जाने से रोक नहीं सकता। फ्री पास है सब जगह जाने का, सिर्फ सिनेमा हाल में नहीं जा सकता। एक अहलकार आ रहा है।

क्यों, भाई साहब, हम राजा साहब से मिल सकते हैं ?
क्यों चन्दा वन्दा चाहिये ?
उनका हाथी पागल हो गया है न। हमको उन्होंने उसे पकड़ने के लिए बुलाया है।
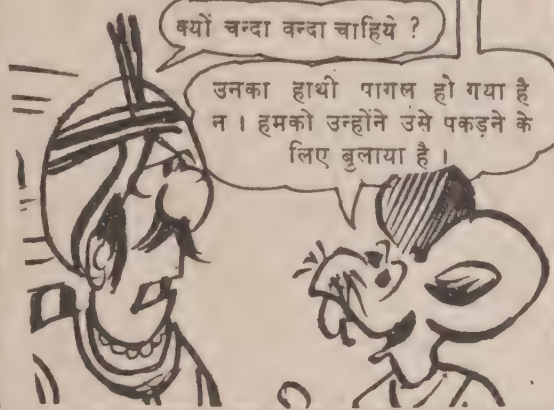
पागल हाथी को पकड़ना है तो राजा साहब से मिल कर क्या करना है ? राजा साहब इस वक्त गुलशन नन्दा का नावल पढ़ रहे हैं। वह पागल हाथी भाग कर कल उधर वाले उस जंगल में गया था। जाओ और पकड़ कर ले आओ। राजा साहब दो-चार रुपये इनाम देगा और चलते बनो।
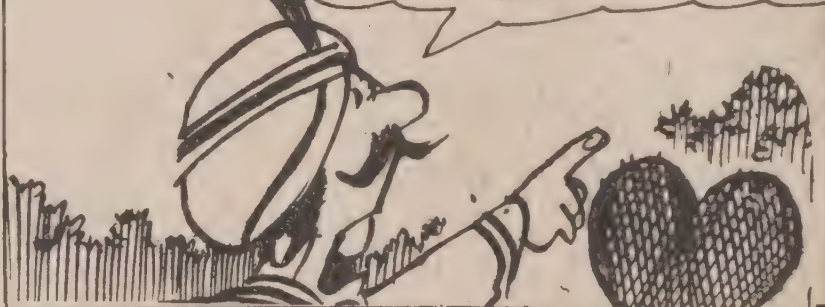
चूहे तुझे कुछ नजर आ रहा है ? मैंने सेंटम की स्ट्रेप लान की ड्रेस पहन रखी है न। बोत कसा हुआ है, टाइट है। मेरी आंखें पूरी नहीं खुल रही हैं। आधी खुली रहती हैं।
वह उधर सबसे बड़ा बड़ा चट्टान नजर आ रहा है न ? उससे आगे घास का छोटा सा मैदान है, उसके पास जंगल है और झाड़ियां हैं। झाड़ियों में मुझे एक बहुत बड़ी काली छाया हिलती जुलती नजर आ रही है। हो न हो यह वह हाथी हो सकता है।

वही है, वही है यह हाथी। पागल की तरह चिंघाड़ रहा है।
लाउड स्पीकर लगा कर चिंघाड़ रहा है क्या ?
याड़ी सुपर मैन अब देर मत कर। सुपर मैन की सुपर छलांग लगा कर गर्दन पर सवार हो जा उसकी, बिजली की तरह—

कहां गया सैन्टम? कमाल है। मैंने कहा था बिजली की तेजी से झपट्टा मार लेकिन इतनी तेजी की तो मुझे भी उम्मीद नहीं थी। अभी-अभी यहां था और अभी-अभी गायब। कितनी सुपर फास्ट छलांग मारी अपने यार ने। अगर सैन्टम इसी फार्म में रहा तो दुनिया के और सुपरमैनों की आकस्मिक छुट्टी कर देगा। उधर से चिघाड़ आई और चिघाड़ मारने के बाद हाथी अपनी सूंड नीचे भी नहीं कर पाया होगा कि स्पेशल क्वालिटी सुपर फास्ट सुपरमैन सैन्टम उसकी गर्दन पर सवार--अब तक उस पागल हाथी के वह दो-तीन चांटे मार भी चुका होगा और हाथी मांफी मांग रहा होगा।

आआ ऽऽ —ऽऽऽ पा ऽऽनी।
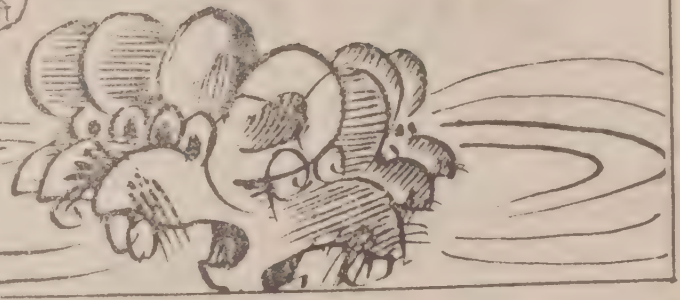
है। यह कौन है? यह तो सैंटम गिरा पड़ा है। नीचे पत्थरों में मेरे पीछे। क्या यह गया ही नहीं था। मैं भी सोचूं कि कोई कितना ही बड़ा सुपर मैन हो इतना फास्ट कैसे जा सकता है?

मिलझिल पिलपिल के [illegible] कारनामे अगले अंक में पढ़िये
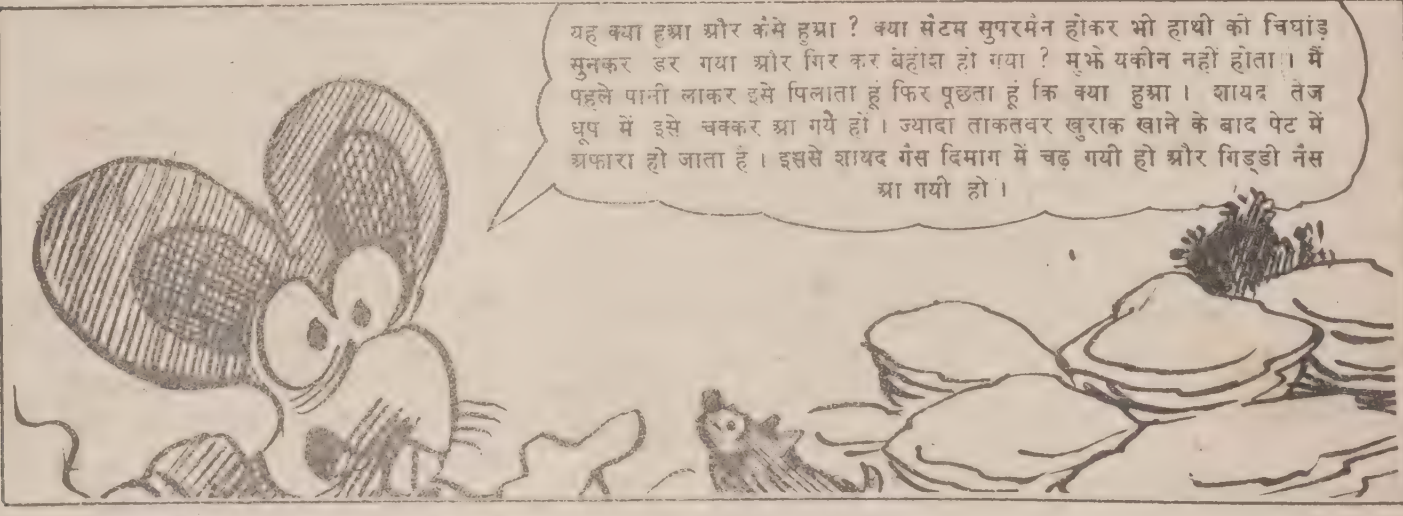
बुढ़ापे में शादी

बाबू ढोलक दास की शादी होने की खबर, मुहल्ले में आग की लपटों की तरह फैल गई. जिसने सुना, वही ताज्जुब करने के साथ-साथ, हंसी से दोहरा हो गया. किसी को यकीन भी नहीं हो रहा था कि बाबू ढोलक दास की शादी हो रही है. और वो भी इतनी उम्र में.

लोगों का इस बात पर चौंकना और हंसना लाजिमी था भी. बाबू ढोलक दास उम्र से तो बूढ़े नहीं कहे जा सकते, पर शरीर के हर अंग की कमजोरी की वजह से वो बेशक बूढ़े नजर आते हैं. अपनी वास्तविक आयु से कम-से-कम पंद्रह वर्ष अधिक. सिर से लेकर पैरों तक जवानी का कोई भी सबूत नजर नहीं आता.

बालों का कालापन सालों पहले ही उनसे रूठ कर, उनका साथ छोड़ चुका है. सिर के बाल तो बाल, मूंछ और दाढ़ी तक झक दूधिया नजर आती हैं. बीच-बीच में से दांतों की अलविदा के कारण, बत्तीसी अंग्रेजी के 'फिल इन द गेप्स' सी नजर आती है.

आंखों की बेवफाई यहां तक पहुंच चुकी है कि चवन्नी अठन्नी सी लगती है, और अठन्नी चवन्नी सी. नजर की कमजोरी की वजह से ही बेचारे बाबू ढोलक दास अक्सर चाय में चीनी के बजाए, नमक का प्रयोग कर जाते हैं.

और कानों की कमजोरी का आलम तो क्या कहा जाए. कहा जाता है कुछ, सुनते हैं कुछ और. धोबी अगर पूछता है—बाबूजी, कपड़े धुलवाने हैं? तो ढोलकदास जी चौंक कर चिल्लाते हैं,'' ''अबे, झगड़े सुलझाने वाला तू कौन होता है? हम अपने झगड़े खुद ही सुलझा लेंगे.'' फिर भी धोबी अपना माथा न ठोंके, तो क्या करे . . .?

कहने का सपाट मतलब यह कि उनके भीतर बुढ़ापे के लगभग सभी सामान्य लक्षण मौजूद हैं. यही वजह है, कि पैसों रुपयों की कमी न होने के बाजवजूद भी, बाबू ढोलक दास फेरों की रस्म का आनंद न ले सके.

जब तक भले-चंगे थे, तब तक उनको कोई लड़की पसंद ही नहीं आती थी. और धीरे धीरे हालत अब यह है कि कोई लड़की उनसे शादी करना पसंद नहीं करती.

वैसे ढोलकदास जी शादी के लिए विशेष उत्सुक नहीं थे. पर कुछ अरसा पहले एक व्यक्ति ने, जब से यह बताया कि बिना विवाह के मुक्ति नहीं मिलती, तभी से उनको शादी करने की भयानक धुन लग गई.

जो भी मिलता, उसी से अपनी शादी करवाने की प्रार्थना सी करने लगते. आखिर कार, एक परोपकारी सज्जन ने उनकी शादी एक जगह पक्की करवा दी. बाबू ढोलकदास तो इस कदर खुश हुए कि लड़की देखना तक उनको जरूरी नहीं लगा. बस, यही सोच-सोचकर मगन हो उठे कि अब शादी भी होगी और मुक्ति भी मिलेगी.

फौरन शादी के पत्र छपवा कर, अपने कुछ दोस्तों की मदद से उन्होंने मुहल्ले के घर-घर में बंटवा दिए. शादी की तारीख तक मुहल्ले भर में सिर्फ यही चर्चा जोरों से चलती रही.

खैर . . .शादी की तारीख आई. शाम होते ही बारात निकालने की धमा-चौकड़ी मचने लगी. मजा लेने के लिए सैकड़ों बुलाए-बिना बुलाए बाराती इकट्ठे हो गए. फिर परेशानी आई वाहन की, यानी दूल्हे राजा की सवारी की.

लोगों की राय थी कि ढोलकदास जी कार में बैठें. पर बाबू ढोलकदास की जिद थी कि घोड़े पर ही बैठेंगे. बड़ी मुश्किल से एक घोड़ी लाई गई. उसको कुछ सजा-धजा कर, जब दूल्हा बने ढोलकदास जी के सामने लाया गया, तो आंखें दगा दे गईं. वो घोड़ी के मुंह की तरफ, मुंह करके बैठने की बजाए, उस की पूंछ की ओर मुंह करके बैठ गए. लगाम थामने के लिए हाथ इधर-उधर फिराया तो हाथ में, घोड़ी की ऊपर को लहराती हुई पूंछ आ गई.

पूंछ को लगाम समझकर उन्हों ने ज्यों ही जोर से उसे खींचा, गुस्से के मारे घोड़ी के नथुने फड़क उठे. घोड़ी ने न देखा दूल्हा, न बारात. जोर से जो उछलकर बिदकी, तो ढोलकदास जी ढोलक की तरह लुढ़कते आ गए नीचे, और घोड़ी तीर की तरह ली सरपट निकल.

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े. आस-पास लोगों की हंसी का तेज ठहाका गूंज उठा. बाबू ढोलकदास अपना सिर थामकर रह गए. फिर कपड़ों को झाड़ते हुए उठे. पर जिद बरकरार कि कार-वार में नहीं बैठेंगे. घोड़ा न मिले तो गदहा ही लाओ.

सचमुच घोड़े का इंतजाम हो न सका, जबकि बारात की निकासी का शुभ मुहूर्त निकला जा रहा था. लिहाजा कुछ लोग राय-मशविरा करके एक गदहा ही पकड़ लाए. वह भी निहायत बौना और मरियल.

गदहे की असलियत भांपी न जा सके, इसलिए ढोलकदास जी की राय पर, गदहे को घोड़े के नाप वाला साज ओढ़ा दिया गया. फलस्वरूप गदहा कानों से पूंछ तक पूरा ढक गया. नीचे क्या बला है? पता ही नहीं लग रहा था.

फिर उसकी पीठ पर बाबू ढोलकदास विराजे. कुछ देर तो गदहा हिम्मत करके उनको संभाले रहा. पर अपने से दुगने बोझ, अंधे पन और अगलबगल बजते बाजों के कारण गदहे का जी मिचला उठा. जुल्दी ही उसने पूरी ताकत से दुलत्तियां चलानी शुरू

कर दीं डर के मारे ढोलकदास उस की पीठ से चिपक से गए.

बारातियों की जोरदार हंसी, यह देखकर फूटी पड़ रही थी. तभी एक ने तेज आवाज में फिकरा कसा, 'अजी, एक गदहा दूसरे गदहे को अपने ऊपर चढ़ा हुआ कैसे सह सकता है? बिदकेगा तो है ही . . .''

और बस तभी गदहे ने पूरी ताकत से 'गर्दभ राग' अलापना शुरू कर दिया, गोया बात सुन-समझ कर अपना विरोध प्रकट कर रहा हो.

बाबू ढोलकदास ने उस पर से उतर जाना ही ठीक समझा. कार में बैठना गवारा था नहीं, सो पैदल ही चलने लगे. लोगों के पेट मारे हंसी के फूल-पिचक कर बुरी तरह दर्द कर रहे थे.

बारात में कुछ लड़कों को नाच करते देख, ढोलकदास जी भी अपने को रोक न सके. 'शादी हमारी हो रही है. सबसे अधिक खुशी हमको है. हमें तो जरूर नाचना चाहिए . . .' सोचकर वो भी ठुमकने लगे. कुछ बड़े-बुजुर्गों ने बड़ी मुश्किल से उनको रोका.

बड़ी अजीबो-गरीब हालत में बारात किसी तरह लड़की वालों के दरवाजे तक पहुंची. वहां का नजारा तो और भी अजीब था. बिजली की सजावट तो दूर, वहां एक लालटेन भी शोभायमान नहीं थी. घोर-घुप्प अंधकार.

ढोलक दास जी ने इसे अपना घोर अपमान समझा. कुछ बाराती भी, जो दावत की नीयत से ही आए थे, भड़क उठे, न सजावट का इंतजाम, न खाने पीने का बंदोबस्त. 'शादी हो रही है या मजाक?' जैसी बहुत सी उल्टी सीधी बातें बारातियों ने सुनानी शुरू कर दीं.

बड़ी देर बाद लड़की के बूढ़े पिता निकले. जान पड़ता था कई दिनों की नींद लेकर चले आए हैं. क्षमा-प्रार्थना करने की बजाए, एक मोटे मुद्गर को हाथ में इधर-उधर घुमाते हुए चिल्लाकर बोले, ''शादी होनी है, सो होगी सज-धज और दावत-वाबत से क्या मतलब? तुम लोग भूख हड़ताल से उठकर चले आए हो क्या? पहली बात तो दूल्हे के अलावा किसी दूसरे को आने की जरूरत ही क्या थी, अगर बाद चले ही आए हो तो दस मिनट बाहर ही गम खाओ. दूल्हे के फेरे पड़वा कर, अभी बाहर लाते हैं . . .''

यह सुनकर सब सन्न रह गए. किसी में कुछ कह पाने का साहस ही नहीं हुआ. बस, मन ही मन ढोलक दास जी को कोसने लगे.

बाबू ढोलकदास जी को भी सांप सा सूंघ गया. शसुर के आदेश पर चुपचाप घर के भीतर चले गए. अंधेरे में ही कुछ रस्म पूरी करवा कर, मुंह सिले बाहर चले आए. एक तो अंधेरा, ऊपर से नजरों की कमजोरी. बेचारे पत्नी की शक्ल तक भी न देख सके.

लड़की वालों ने लड़की को एक नौकरानी और चार नौकरों के साथ एक बेहद खटारा खुली जीप में विदा कर दिया. जीप मालूम पड़ती थी, हड़प्पा की खुदाई से निकली हो. नौकर उसे किसी तरह धक्के दे कर ले जा रहे थे.

इसके बावजूद भी ढोलकदास जी खुश थे कि पत्नी उनको हीरे की कनी सी मिली है. सारे बाराती भी बधू को देखकर, ढोलकदास जी से मन मन में जलने से लगे. बधू वाकई बाबू ढोलकदास को देखते हुए सौ गुना अच्छी थी.

खटाराजीप सुबह होते-होते तक कहीं मुकाम तक पहुंच सकी. ढोलकदास जी बड़ी इज्जत के साथ पत्नी, नौकरानी और नौकरों को घर में ले गए. उनकी खूब खातिर की. छप्पनों तरह के पकवान खिलाए.

खा-पीकर लंबी-लंबी डकारें लेने के बाद, वधू को वहीं छोड़कर जब बाकी लोग चलने को हुए तो वधु की सूरत देखकर, ढोलकदास जी ने अपना माथा ठोंक लिया. दरअसल दुल्हन वह थी, जिसे अभी तक नौकरानी समझा जा रहा था.

अपनी पत्नी को बाबू ढोलकदास ने ऊपर से नीचे तक देखना शुरू किया. बालों की मात्रा बहुत ही कम, सो भी बुढापे की मेहरबानी यानी सौ फीसदी सफेद. झुरियों से भरा चेहरा. एक बल्ब फ्यूज. उल्टे तवे को भी मात देता रंग. ऊपर-नीचे के सारे दांत लापता. उनसे और देखा न गया. दिमाग-चकरधिन्नी घूमने लगा . . . और बाबू ढोलकदास जी सिर थामकर जमीन पर ही बैठ गए.

कुछ प्यारे-प्यारे पोज कुछ प्यारी प्यारी बातें

कई जानवर बड़े विचित्र होते हैं। कुछ के क्रिया कलाप या पोज विचित्र होते हैं। इन विशेष पोजों में चित्रित वास्तविक जानवरों को देख कई विचार पैदा होते हैं। यदि वह बोल पाते तो शायद यह कहते,ऐसा लगता है।हमने यहां कुछ ऐसे ही पोज और कुछ दीवाने वाक्य संकलित किये हैं।

कुछ दाल में काला जरूर है।

मछलियों का झुंड
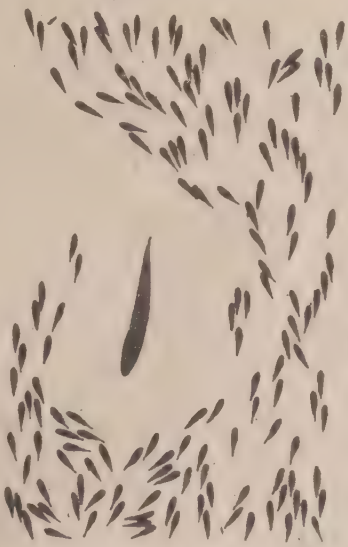
इस भीड़ भड़क्के से मैं तो बोर हो गई हूं।

मुझे क्या ? अपनी तो रोज ही दीवाली है।
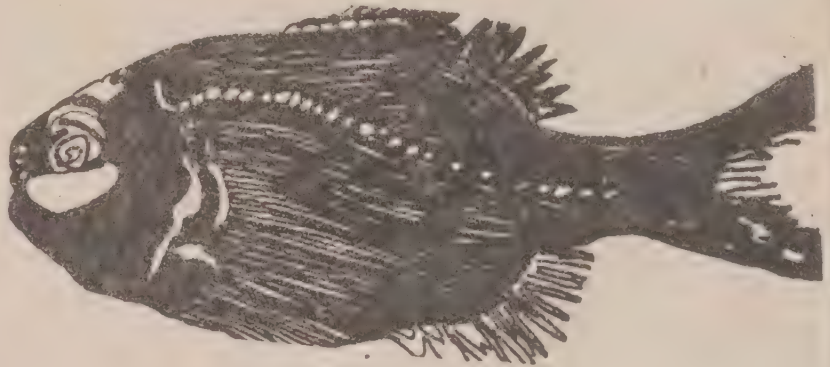
(चित्र—आंख के नीचे प्रकाश टार्च की तरह फेंकने वाली ग्रंथी वाली गहरे समुद्र की मछली। चित्र में दिखाई शरीर पर सफेद बिन्दियां बल्बों की तरह जलती हैं।)

इस महंगाई के जमाने में घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या ?

हैं यह कैसे हो सकता है ?

(चित्र—एक विशेष जाति का गिबन)

मेरी बात दूसरों को चुभती है तो मैं क्या करूं ? सच कहने की मेरी आदत है ।
(तलवार मछली)
· नहीं पहचाना मुझे ?
(चित्र—ईरानी चिमगादड़ का चेहरा)
जब भी मुझे वह घटना याद आती है हंसी आ जाती है ।
पहले यहां जंगल हुआ करता था ।
(चित्र—जंगली सुअर की एक जाति)
बड़ी शर्म आ रही है । बर्थ डे पर उसे देने के लिए कोई प्रेजेन्ट नहीं ले सका । सिर्फ यह फूल हैं । बुरा तो नहीं मान जायेंगी ?
मुझे ऐसा दिखता है कि तीसरा विश्व युद्ध होकर रहेगा ।
छोड़िये साहब वह पीठ पीछे क्या कहता है । जरा सामने आके बात करे वह ।
नाइन्साफी की हद है । मुझसे तो चुप रहा नहीं जाता ।
(चित्र—ठोड़ी के नीचे आवाज निकालने के लिये हवा के ब्लेडर वाला मेंढ़क)
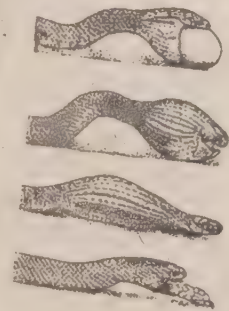
चना कुरमुरा

अकसर मेरे पति एक वकील मेरे साथ पार्टियों में जाने में कतराते हैं क्योंकि जहां भी वे जाते हैं बहुत से लोग उन से सलाह मांगते रहते हैं और इस कारण वे पार्टी के आनन्द से वंचित रह जाते हैं। मैंने एक डाक्टर से पूछा ''क्या आप के साथ भी ऐसा ही होता है?''

''हर समय'' वे बोले।

''फिर आप ऐसे लोगों से अपना पीछा कैसे छुड़ाते हैं?''
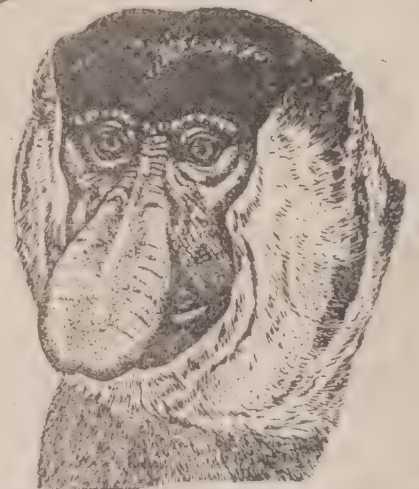
''मेरे पास इसका एक बहुत ही बढ़िया इलाज है'' डाक्टर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया ''जब कोई मुझे अपनी तकलीफें सुनाने लगता है, तो मैं उन्हें एक बात कह कर ही चुप कर देता हूं'' ''कपड़े उतारो''!

●

एक नई सेक्रेटरी की आवश्यकता होने पर एक फर्म के प्रजीडेन्ट ने आवेदकों का साईकोलोजी परीक्षण करवाने का फैसला किया। तीन लड़कियों का टेस्ट लिया गया।

''दो और दो कितने होते हैं?'' साईकोलोजिस्ट ने पहली लड़की से पूछा।

''चार'', उसने तुरन्त उत्तर दिया। दूसरी ने उसी प्रश्न के उत्तर में कहा ''यह २२ भी हो सकते हैं।'' तीसरी ने उत्तर दिया कि ''२ और २ चार भी हो सकते हैं तथा २२ भी हो सकते हैं।''

लड़कियों के कमरे से बाहर चले जाने के बाद साईकोलजिस्ट ने गर्व पूर्वक कहा, ''देखा यह है साइकोलोजी टेस्ट का लाभ! पहली लड़की ने तो सीधा सादा चार कहा, दूसरी ने दाल में काला भांप कर २२ उत्तर दिया, तथा तीसरी ने होशियारी से दोनों ही उत्तर दे दिये। अब आप बताइये आप को कौन सी चाहिये?''

प्रेजीडेन्ट ने बिना हिचकिचाहट के उत्तर दिया ''सुनहरी बाल और नीली आंखों वाली चाहिये''।

●

खेल / तारीख और दिन	उद्घाटन	तीरंदाजी (पु. और म.)	एथलेटिक्स (पु. और म.)	बैडमिंटन (पु. और म.)	बास्केटबॉल (पु. और म.)	बॉक्सिंग	साइक्लिंग (पु.)	घुड़सवारी		फुटबॉल	
19 नवम्बर शुक्रवार	(मशाल)										
20 नवम्बर शनिवार					✱			✱		✱	✱
21 नवम्बर रविवार		✱			✱		✱	✱		✱	✱
22 नवम्बर सोमवार		✱			✱				✱	✱	✱
23 नवम्बर मंगलवार					✱		✱	✱		✱	✱
24 नवम्बर बुधवार					✱		✱			✱	✱
25 नवम्बर बृहस्पतिवार			✱	✱	✱		✱	✱		✱	✱
26 नवम्बर शुक्रवार			✱	✱	✱	✱	✱				✱
27 नवम्बर शनिवार			✱	✱	✱	✱		✱			✱
28 नवम्बर रविवार			✱	✱	✱	✱	✱				✱
29 नवम्बर सोमवार				✱	✱	✱					
30 नवम्बर मंगलवार			✱	✱	✱	✱					
1 दिसम्बर बुधवार			✱	✱	✱	✱					
2 दिसम्बर बृहस्पतिवार			✱	✱	✱						
3 दिसम्बर शुक्रवार				✱	✱	✱					
4 दिसम्बर शनिवार											
समय	सु. — शा.1500 - 1700	सु.0930 - 1230 शा.1400 - 1600	सु.1000 - 1145 शा.1330 - 1630	सु.0900 - 1300 शा.1400 - 2000	सु.0900 - 1200 शा.1300 - 2200	सु. — शा.1700 - 2200	सु.0900 - 1200 शा.1300 - 1630	सु.0900 - 1200 शा.1400 - 1630	सु.0900 - 1200 शा.1400 - 1630	सु. — शा.1330 - 1630	सु. — शा.1330 - 1630
क्रीड़ास्थल	जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम लोधी रोड	दिल्ली यूनिवर्सिटी ग्राउन्ड	जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम लोधी रोड	इन्द्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम राजघाट	तालकटोरा इनडोर स्टेडियम ताल कटोरा गार्डन	हॉल ऑफ स्पोर्ट्स मथुरा रोड	यमुना वेलोड्रम राजघाट	हरबक्श स्टेडियम दिल्ली कैण्ट	निकलसन रेनजिज़ दिल्ली कैण्ट	अम्बेडकर स्टेडियम	मॉडल टाऊन स्टेडियम

पु. = पुरुष म. = महिला सु. = सुबह शा. = शाम

	शा.1700 - 2000																	(पु. और म.)
दिल्ली गोल्फ क्लब डा. जाकिर हुसैन रोड	सु. शा. 0700 - 1700											*	*	*	*			गोल्फ (पु.)
दिल्ली यूनिवर्सिटी ग्राउन्ड	सु.0900 - 1200 शा.1400 - 1640					*		*	*	*	*	*	*					हैन्डबॉल(पु.)
नेशनल स्टेडियम	सु.1100 - 1230 शा.1330 - 1630				*	*	*	*	*	*	*	*	*	*	*	*		हॉकी (पु.)
शिवाजी स्टेडियम	सु.0930 - 1100 शा.1330 - 1630									*	*	*	*	*	*	*		हॉकी (म.)
रामगढ़ लेक, जयपुर	सु.0930 - 1200 शा.1500 - 1700										*	*		*	*	*		नौकायन
तुगलकाबाद रेन्ज	सु.0900 - 1230 शा.1400 - 1630			*	*	*		*	*	*	*	*	*	*				निशानेबाजी
तालकटोरा स्वीमिंगपूल	सु.0930 - 1230 शा.1330 - 1630						*	*	*	*	*	*	*	*	*	*		तैराकी (पु.औरम.)
हॉल आफ स्पोर्ट्स मथुरा रोड	सु.0900 - 1200 शा.1500 - 2200										*	*	*	*	*	*	*	टेबल टेनिस (पु. और म.)
टेनिस स्टेडियम हौज खास	सु. शा. 1100 - 1630				*	*	*	*	*	*	*	*	*	*	*	*		टैनिस (लॉन) (पु. और म.)
इन्द्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम राजघाट	सु.0900 - 1300 शा.1500 - 2200		*	*	*	*	*	*	*		*	*	*	*	*	*		वॉलीबॉल (पु. और म.)
एशियाड सेन्टर खेल गांव	सु. — शा.1430 - 1830						*	*	*	*	*	*	*	*	*	*		भारोत्तोलन
अम्बेडकर स्टेडियम	सु. — शा.1330 - 1630			*	*	*	*	*										कुश्ती
अरब सागर, बंबई	सु. — शा.1500 - 1730							*	*	*	*	*	*	*	*	*		याचिंग
जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम लोधी रोड	सु. — शा.1530 - 1700																	समापन समारोह

ओ मोटी मोटी

आज सारी जगत पतले होने और स्लिमिंग कोर्सों के चक्कर में पड़ी है। लेकिन यकीन जानिए मोटी होना बुरी बात नहीं है। मोटी लड़कियों से हमारा निवेदन है कि वह जमाने की उल्टी हवा से न डरें। मोटी बनी रहें, आप मोटी क्यों हों... हम बताते हैं।

मोटी लड़कियों के मां-बाप चैन की नींद सोते हैं। उन्हें पता है कि उनकी मुटल्ली को कोई भगाकर ले जाने को हिम्मत नहीं कर सकता, न ही कोई अपहरण कर सकता है।

दुनिया में छत्तीस व्यंजन आपकी सेवा के लिये ही बने हैं। खाना बनाने वाला आपको खाना भंभोड़ते देख अपनी पाक कला को सार्थक समझने का आनन्द पाता है। पतलेपन की शौकीन लड़कियां डाईनिंग टेबल पर काला दाग हैं।

आइसक्रीम इंडस्ट्री आपके सिर पर ही जिन्दा है। लाखों लोग आपके मोटापे की रोटियां खा रहे हैं। आप गरीब परवर हैं।

कोई यह नहीं कह सकेगा आप यतीमखाने में पली हैं।

आपके सूट के लिए कपड़ा अधिक लगता है। हमारी कपड़ा मिलों को आपसे अमूल्य प्रोत्साहन मिलता है। आप मोटी होकर देश की प्रगति में बड़ा योगदान दे रही हैं।

ग्रापसे कोई बोर नहीं होगा। चित्र में एक पतली लड़की को देखिए। वह रोज ही ग्रपनी डाइटिंग का किस्सा लेकर बैठ जाती है ग्रौर उसका बायफ्रेंड उससे ग्राखिर बोर होकर जा रहा है।

ग्राप लोगों को हंसने के ग्रवसर प्रदान करती हैं।

मार पड़ने पर डाक्टरों को इंजेक्शन लगाने में ग्रासानी रहती है।

भीड़ में टक्कर लगने पर ग्रापकी हड्डियां नहीं चरमरातीं। चर्बी की परतें दबाव को स्प्रिंग की तरह झेल जाती हैं।

ने पर ग्रापका मोटापे के कारण पति पर दबदबा । वह ग्रापसे टक्कर लेने का साहस नहीं जुटा पायेगा।

शादी से पहले जो स्कर्ट ग्राप पहना करती थीं बाद में ग्रापके बच्चे या पतिदेव तम्बू की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन' बगीची पीरजी : प्यार में आदमी अपने आपको और दुनिया भूल जाता है। लेकिन प्यार को क्यों नहीं भूलता।

उ० : यह ठीक वैसे ही है जैसे हमारा मैदा सब कुछ पचा डालता है। मीट डालो वह भी पच जाता है लेकिन मैदा अपने आपको नहीं पचाता।

राजा प्रसाद वर्मा मुजफ्फरपुर (बिहार) : अगर प्रेमिका आपसे दूर रहे, नाराज होकर पत्र न लिखे तो क्या करना चाहिए ?

उ० : पुराने प्रेम पत्रों को निकाल कर दोबारा पढ़ना चाहिए। कोई चीज नयी नहीं मिल रही है तो सैकिण्ड हैंड से काम चलाओ।

अशोक जौहर 'गुंजन', मोती बाजार देहरादून : गरीब चन्द जी यदि आपकी बिरादरी वाले हम गरीबों पर इसी तरह अन्याय करते रहे तो उनका क्रिया-कर्म करके पार्सल बनाकर आप तक दीवाना आफिस तक पहुंचा दूंगा ?

उ० : आजकल पार्सल की डाक खर्च बहुत है। और गरीब हो जाओगे।

किशोर कुमार अग्रवाल, सिलिगुड़ी : गरीब चन्द जी अगर संसार की सभी लड़कियों को बहन बना लिया जाय तो क्या होगा।

उ० : सारी दुनिया को आपको साला कहने का मौका मिलेगा।

महेश चन्द शर्मा, हसनपुर जागीर : गरीबचन्द जी आप सिलबिल पिलबिल के साथ कितने सालों से रह रहे हैं।

उ० : इनके साथ रहने का अनुभव कलेंडर के सालों से नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि कभी इनके साथ पांच मिनट बिताना भी पचास साल के बराबर भारी हो जाता है और कभी दो साल भी दो दिन के बराबर लगते हैं।

चेतन दास शर्मा, अमरावती : मेरा एक लड़की से प्यार हो गया था। अब मुझे छोड़कर बाहर गांव चली गयी उसकी याद मुझे दिन-रात सताती है। अब आप बताइए मैं क्या करूं ?

उ० : सिर पर एक ईंट दे मारिये, शायद याद दाश्ता चली जाये।

मयादरस बी. के. बंड, बोंगई गांव : गरीब चन्द जी मैंने आपकी डाक के बारे में दीवाना में पढ़ा है तो, आपका जवाबों का जवाब नहीं है तो आप कृपया यह बताने की चेष्टा करे कि गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है परन्तु जब मनुष्य की मौत आती है तो वह कहां भागता है ?

उ० : वह आगे-आगे भागता है और पीछे-पीछे वह जिनका वह कर्जदार है।

राकेश कुमार सिंह, साहिबगंज (स. प्र.) बिहार : गरीब चन्द जी, आप इतना गरीब होकर भी अपने परिवार का खर्च किस प्रकार चलाते हो। कृपया मुझे यह नुस्खा बतावें।

उ० : यह नुस्खा कोई राज नहीं है। हिन्दुस्तान के 60 प्रतिशत लोग जो गरीबी की रेखा के नीचे हैं जानते हैं।

सुरेन्द्र खुराना, 'पप्पू' मोंगा : डीयर गरीब चन्द जी, अगर लड़कियां ड्राइवर और लड़के कन्डकटर हों तो—?

उ० : तो बसों के डिपो शादी के दफ्तरों के पास बनवाने पड़ेंगे।

तिलक राज अरोड़ा, खुरजा, उ. प्र. : डियर गरीब चन्द जी, खुश रहो! 'कृपया ये बताइए कि अगर आपके सामने बिल्ली आ जाए तो आप क्या करोगे ?'

उ० : मैं क्या करूंगा ? जो कुछ करना होगा वही करेगी।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला म. प्र. : गरीब चन्द जी जिन्दगी का मकसद क्या होना चाहिए ?

उ० : राम नाम जपना पराया माल अपना कैसा रहेगा ?

श्याम गागनानी, मुर्तिजापुर, अकोला : हर मरने वाला स्वर्गीय क्यों कहलाता है। नरकीय क्यों नही ? क्या मरने के बाद सभी स्वर्ग में जाते हैं।

उ० : क्योंकि इस बात की चैकि[ंग] की जा सकती कि कोई स्वर्ग [...] नर्क। कोई अपने चाचा को छोड़[ने] स्टेशन जाता है तो लौट कर प[...] को यही बताता है कि चाचा ज[ी] क्लास में गये हैं बेशक वह थर्ड [...] क्यों न सफर कर रहे हों। व[ह] सोचता है पड़ौसियों को क्या [...] लगेगा।

बीना भाटिया, द्वारका नगर, ज[...] गरीब चन्द जी मैंने कल ही [...] बिरादरी के दो सदस्यों को वि[...] इस फानी दुनिया से मुक्ति [...] आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ [...]

उ० : कष्ट मरने वालों को हुआ [...] और आपको कष्ट यमराज के [...] में होगा ! मुझे क्यों कष्ट होने ल[...]

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : [...] बात से ही 'वो' रूठ जाती [...] करूं ?

उ० : आप हाथ जोड़ कर मनाते [...] कुछ अर्से में हाथ जोड़ने और चि[...] की ऐसी आदत पड़ जायेगी कि [...] किसी मंत्री के चमचे बन जाओगे [...]

अनिल झा, बरकत कालोनी, ज[...] डियर गरीब चन्द जी, आपके बि[...] वाले मेरी नई-नई किताब कुतर [...] हैं इसलिए मैं गरीब बन गया हूं।

क्या आप मुझे अपनी बिराद[री में] शामिल करना चाहेंगे? जिससे मैं [...] बदला ले सकूं।

उ० : आपको खाना खाते समय [...] पढ़ने की आदत होगी। खाने के [...] लग जाने पर चूहों का उन्हें कु[...] पैदाइशी हक है। गरीबों की बि[रादरी] में शामिल होने के लिए आपको [...] नहीं करना पड़ेगा। यह काम म[...] व आबादी पर छोड़िये।

विष्णु दास बैष्णव जैतारण : अ[...] पत्नी ने आपको ही क्यों चुना? अ[...] देखकर आपकी पत्नी को हंसी [...] होगी !

उ० : नाम से क्या होता है ? नाम [...] आपका भी ऐसा है कि किसी [...] पहनने वाली लड़की को बताओगे [...] उसे हंसी आयेगी।

प्र० : संसार का सबसे अधिक नमक किस समुद्र में है और यह कहां है?

उ० : 'डेड सी' कहलाने वाला समुद्र जो वास्तव में एशिया की एक बुहत बड़ी झील ही है का उत्तरी आधा भाग जोरडन का है तो इसका दक्षिणी आधा भाग जोरडन और इजरायल के बीच बंटा हुआ है।

यह समुद्र ३९४ वर्ग मील में फैला हुआ है और इसमें लगभग ११,६००,०००,००० टन नमक है। जोरडन नदी जिसमें केवल १००,००० भाग में से ३५ भाग नमक है 'डेड सी' में गिरती है, जिस से हर वर्ष ८५०,००० टन नमक और समुद्र में एकत्रित हो जाता है।

इस झील की पानी की सतह मेडिटेरेनियन से १,३०२ फीट नीचे है और इस कारण संसार में पाई जाने वाली पानी की सब से नीची सतह है। गर्मियों में वाष्पीकरण के कारण यहां के पानी की सतह सर्दियों की तुलना में १०-१५ फुट नीचे चली जाती है। 'डेड सी' से पानी के बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है परन्तु पानी का लेवल वाष्पीकरण से सन्तुलित रहता है। नीले सफेद बादल जो झील पर एक धुंध के समान छाये रहते हैं उड़ी हुई नमी को ले जाते हैं।

इस 'डेड सी' का बाईबल में भी कई स्थानों पर जिकर है। होटलों इत्यादि की सुविधा न होते हुए भी पर्यटक यहां की गर्म मौसम के कारण यहां आते हैं।इस स्थान का इतिहास तथा प्राकृतिक दृश्य भी मन को भाने वाला है इस स्थान के महत्व की चरम सीमा इस नमकीन समुद्र में तैरना है। क्योंकि यहां पानी में इतना अधिक नमक है कि इसमें डूबना बहुत ही मुश्किल है।

प्र : पृथ्वी की सतह पर जमीन से ज्यादा पानी क्यों है?

उ : इस प्रश्न का उत्तर पृथ्वी की सतह बनाने वाली उन चट्टानों की बनावट में है जिनसे पृथ्वी की ऊपरी भूपटल बना हुआ है।

भूपटल के बड़े-बड़े भागों में यह चट्टान हल्के रंगों की हैं। जिन्हें ग्रेनाईट कहते हैं यह दूसरी चट्टानों की तुलना में हल्की भी होती हैं इन्हें ग्रेनाईट चट्टानें इसलिये कहा जाता है क्योंकि ग्रेनाईट सबसे ज्यादा बहुतायत से मिलती है। दूसरी चट्टानें गहरे रंग की और भारी वज़न की होती हैं इन्हें बेसल्टिक चट्टानें कहते हैं क्योंकि इनमें सबसे ज्यादा बेसाल्ट चट्टानें पाई जाती हैं।

हमें मालूम है कि पृथ्वी की सतह के कुछ सौ मील भीतर लावा है और पटल और चट्टानें जो ५० मील के करीब मोटी हैं इस तरल कोर पर ही तैर रही हैं।

ग्रेनाईट चट्टानें बेसल्टिक चट्टानों से ऊंची तैरती हैं जैसे 'डाट' लकड़ी से ऊंची तैरती है, इस कारण ग्रेनाईट चट्टानों वाले भागों पर सारे महाद्वीप और बेसाल्टिक भागों पर समुद्रों के बेसिन हैं। यदि पृथ्वी की सतह की सारी चट्टानें एक से तत्वों की होतीं तो संसार एक मील गहरा एक बहुत बड़ा पानी का महासागर होता।

पर समुद्र में पानी क्यों होता है? इस के तीन कारण हैं पहला—पिघली हुई चट्टानें अधिक पानी धारण कर लेती हैं बनिस्बत उनके ठंडा होने पर सख्त पड़ने के! इसलिये जैसे-जैसे पृथ्वी की सतह ठोस होती गई अधिक पानी भाप बनकर वायुमंडल में मिलता जाता है। दूसरे पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति इस पानी को अन्तरिक्ष में जाने से रोकती है, जैसे यह हमारी सांस ली हुई वायु को भी वातावरण में बनाये रखती है। तीसरे—पृथ्वी पर दबाव तथा तापमान का संबंध ऐसा है कि भाप तरल रूप में ही अधिकतर पृथ्वी पर रहती है।

प्र० : स्टेलेकटाइट कहां देखने को मिल सकते हैं?

उ० : स्टेलेकटाइट गुफाओं की छतों से हिमलम्बों के समान लटकते निक्षिप्त पत्थर होते हैं। स्टेलेगमाइट इसी प्रकार के निक्षिप्त पत्थर होते हैं जो गुफाओं के फर्श से तिकोनों या खम्बों के रूप में उठते हैं।

गुफाऐं अधिकतर चूने पत्थर और चाक की चट्टानों में बनती हैं, क्योंकि पानी इन चट्टानों को घोल देता है। उदाहरण के लिये बेलजियम में 'हान' की गुफाओं से बहती 'लैसी नदी' के एक दिन में पांच टन चूना पत्थर बहा ले जाने का अनुमान है। बाद में यह दुबारा निक्षिप्त हो जाता है कारबोनेट के रूप में जो स्टेलेकटाइट और स्टेलगमाइट बनाते हैं।

गुफाओं की दीवारों तथा छतों से रिसता पानी निरन्तर गिरता तथा उड़ता रहता है। गुफा की छतों पर पत्थर के हिमलम्ब बन जाते हैं जो धीरे-धीरे केलशियम कारबोनेट की परतों के चढ़ने से बढ़ते जाते हैं। स्टेलकटाइट शब्द ग्रीक भाषा के शब्द जिस का अर्थ है 'बूंद बूंद कर' से आया है। एक आम शब्द 'ड्रिपस्टोन' भी प्रयोग में लाया जाता है जो हर प्रकार के ऐसी बनावटों के लिये प्रयुक्त होता है।

शुरू में स्टेलेकटाइट खोखली होती है क्योंकि कारबोनेट की निक्षिप्तता पानी की बूंद के बाहरी किनारे पर बहुत तेज़ी से होती है और जैसे-जैसे सूखता पानी अपने भीतर का खनिज निक्षिप्त करता जाता है खाली स्थान भरता जाता है और स्टेलेकटाइट एक ठोस रूप ले लेती है। जब गुफा की छत की दरारों से पानी धीरे-धीरे रिसता है तो पत्थर का एक लटकता परदा बन जाता है, जो छेद से पानी गिरने पर नोकीला स्टेलेकटाइट होता।

इसके स्थान पर यदि पानी इतनी तेजी से बह रहा हो कि वह फर्श पर गिर उछल जाता हो तो इसका केलशियम कारबोनेट फर्श पर ही निक्षिप्त हो जाता है जो छोटी छोटी नोकोली गुम्बद का रूप लेता है, इन्हें ही स्टेलेगमाइट के नाम से जाना जाता है। धीरे-धीरे बढ़ कर ये स्टेलेगमाइट ऊपर छत से लटकती स्टेलेकटाइट से मिल कर एक खम्बे जैसी हो जाती हैं। कुछ गुफाओं के फर्श इन स्टेलेगमाइटों से भरे रहते हैं ये इतनी ऊंची हो जाती हैं कि गुफा के द्वार ही बन्द कर लेती हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

ताएक्वोन्डो

ताएक्वोन्डो' क्या है ?

कोरिया की भाषा में 'टेक' का अर्थ है पैरों का प्रयोग जैसे लात चलान्ना, कूदना इत्यादि 'वोन' का अभिप्राय हाथों से लड़ना जैसे मुक्का मारना, 'डो' उस कला को कहते हैं जिसमें अपने हाथ पैरों की सहायता से अपनी रक्षा की जाती है।

ताएक्वोन्डो' केवल आत्मरक्षा के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला मार्शल आर्ट ही नहीं है बल्कि यह एक ऐसा शारीरिक व्यायाम है जिसको करने से बल और फुर्ती का ऐसा विकास हो जाता है जिससे शारीरिक तथा मानसिक स्थिति उत्तम हालत में रहती है।

यह केवल एक कला या दक्षता के इलावा एक पूर्वी फिलोस्फी है। ताएक्वोन्डो के छात्र के लिये शान्त और गंभीर रह अपना आत्मविश्वास बनाये रखना अनिवार्य है।

'इसकी शुरूआत'—

लोगों का विचार है कि कोरियन ताएक्वोन्डो' का आरम्भ चीनी आत्मरक्षा की कला 'कुंगफू' से हुआ है। प्राचीन दस्तावेजों के अनुसार चीन की आत्मरक्षा की कला का आरम्भ बौद्ध भिक्षु 'धर्म' ने शाओलिंन मन्दिर के भिक्षुओं को यह कला एक शारीरिक व्यायाम के रूप में सिखाई थी। शाओलिन का मन्दिर चीन में होनान प्रदेश में था। 'भिक्षुधर्म' एक प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध भिक्षु थे जो सन् ५२० ए. डी. में चीन आये थे। और शाओलीन के मन्दिर में नौ वर्ष तक उन्होंने आत्मरक्षा की कला की शिक्षा दी थी। 'कराटे' जापानी आत्मरक्षा कला जो 'टेकवोन्डो' के बराबर है के आरम्भ के विषय में कोई विस्तरित रिकार्ड प्राप्त नहीं है। इस विषय में दो धारणायें हैं, एक के अनुसार चेनयुआन-पिन नामक राज्य के एक चीनी जिन्हें जापानी बना लिया गया था इस चीनी कुंगफू कला को जापान में सिखाने वाले व्यक्ति थे। दूसरे आकिनावा के मार्शल आर्ट ओकिनावाटे से कराटे का विकास किया गया है।

विकास

माशल आर्ट का आरम्भ कोरियों में हुआ था और २००० वर्ष से जाना जाता है। शुरू में इसे कई नामों से जाना जाता था जैसे, 'सुब्येक्ता, ' 'क्वेनबैक', 'रयोन' 'टेयोक तथा 'जेकयोन'। आधुनिक युग में आकर ही मार्शल आर्ट का विकास आत्मरक्षा तथा शारीरिक विकास की एक पूर्ण कला बन जाने पर इसे 'टेकवोन्डो' नाम दिया गया है। आजकल टेकवोन्डो एक जानामाना आधुनिक खेल भी है।

सन् १९८० में मास्को के ८३ वें ओलम्पिक खेलों के सैशन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय ओलयम्पिक कमेटी ने वर्ल्ड टेकवोन्डो फेडरेशन को मान्यता भी दे दी थी। अब डब्लू टी एफ' खेलों की अन्तर्राष्ट्रीय कौंसिल से भी संबंधित है। इस कौंसिल का मुख्य दफ्तर लंदन में स्थित है।

लगभग १५,०००,००० इच्छुक ५००० स्कूल या क्लबों में टेकवोन्डो कि नियमित ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं. इनके शिक्षक लगभग २०० उच्चतम शिक्षित प्रशिक्षक हैं जो सब ही 'ब्लेक बेल्ट' प्र... हैं।

भारत में ताएक्वोन्डो

भारत में टेकवोन्डो की कला का आर... सन् १९७५ में सुचारू रूप से आर... हुआ। बाद में सन् १९७८ में भारत... टेकवोन्डो फेडरेशन बनाई गई, इस का मु... दफ्तर लखनऊ में है। अब लगभग स... राज्यों में इसके दर्जानों स्कूल खोले जा चु... हैं, जहां हजारों छात्र नित्य ही नियमित रू... से टेकवोन्डो कला को सीखते हैं!

दीवाना के अंक 16 में प्रकाशित...
चित्र वर्ग पहेली का सही हल
सरमायादार, सदाबहार
सरसराहट अक्समात
सही हल—अ-सरदार
विजेता (निर्णय लाटरी द्वारा) अमित... अग्रवाल द्वारा पी० के० अग्रवाल, प्रेम... कुटीर, रानी बाजार, बीकानेर—
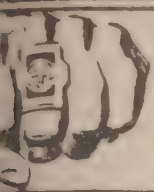
फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर
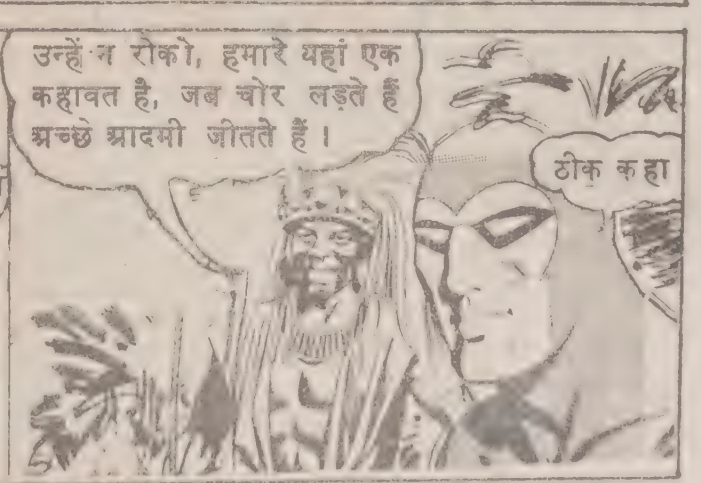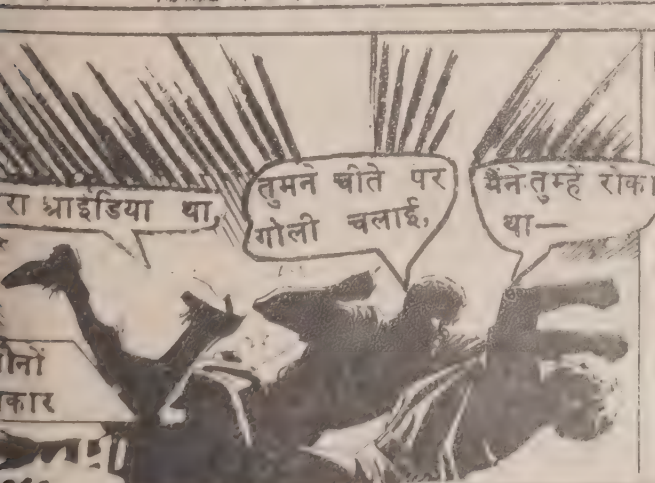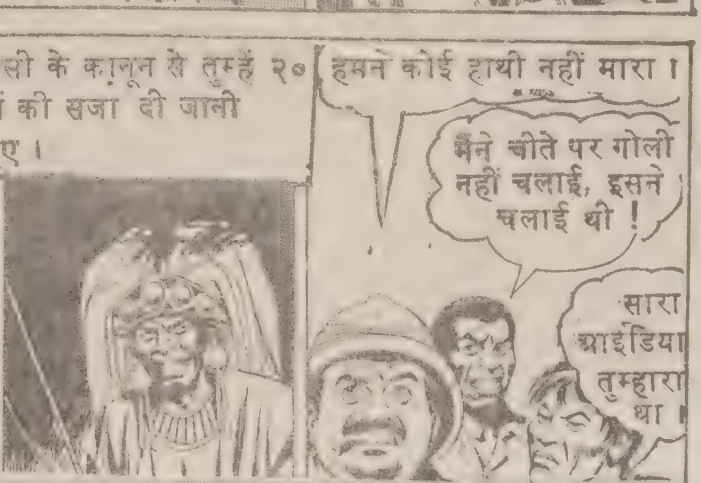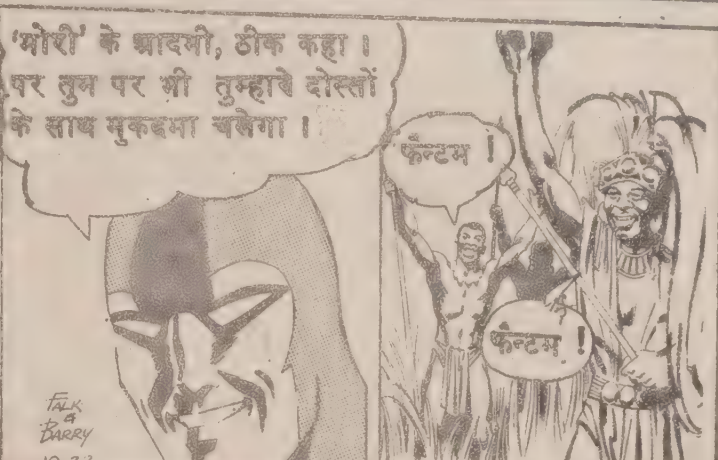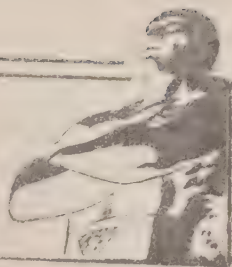
शिकार चोर आपस में लड़ते हैं!
तेरी गलती थी
तेरा विचार था
तूने किया था
वाम्बसी योद्धा खुश होते हैं।
FALK & BARRY 10/27

मुखिया अब तुम्हारा दंड सुनायेंगे।

मुखिया कहते हैं तुमने अपने को स्वयं दंडित कर लिया, कोड़ों की जरूरत नहीं है···
बहुत धन्यवाद।
क्या मेहरबानी की?
पर बाघ द्वारा नुकसान भरने के लिए तुम्हें १०० चांदी के सिक्के देने होंगे।
१००? और इसे तुम इन्साफ कहते हो?
पुराने जमाने में अपराधी चींटियों के बिल में गाड़ दे
तुम पसन्द करोगे?
FALK & BARRY 10/28
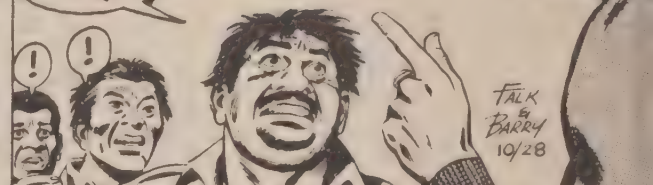
शिकार चोर।
पैसे यह रहे, अब हम जाते हैं।
पैसे गिनने तक नहीं
FALK & BARRY 10/29
पूरे हैं? उनसे कह दो, अगर वापिस आये तो जायेंगे नहीं।
संदेश उन्हें मिल गया

वो देखो हाथी दांत, हम फिर आयेंगे कभी।
और चींटियों के बिल में गड़ेंगे मूर्ख?
FALK & BARRY 10/30
मेरे चेहरे पर यह चिन्ह जहां उस नकाबपोश ने घूंसा मारा था क्या है यह?
खोपड़ी का चिन्ह! फैंटम निशान, मैंने तुम्हें साव किया था।
यह कभी भी नहीं हटेगा
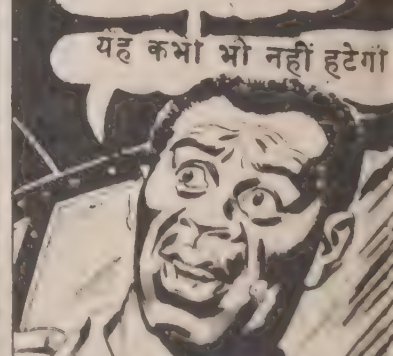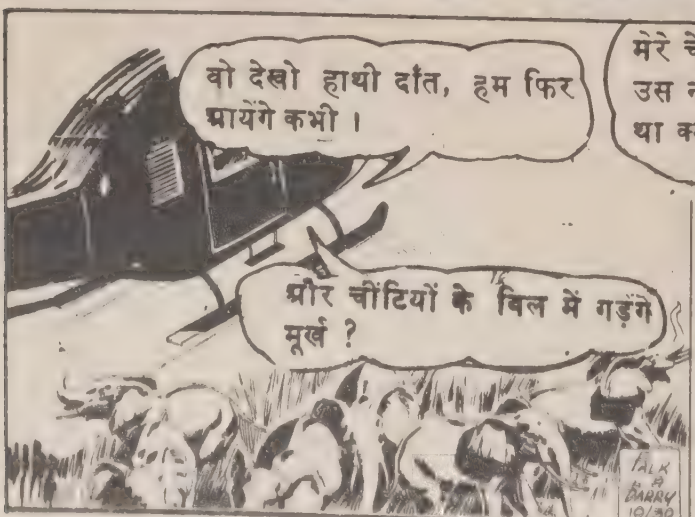
मूवी मसाला

जनरल जिया का लता मंगेशकर पर तिबन्ध ..... पाकिस्तान के कुछ सांस्कृक संस्थान लता मंगेशकर को पाकिस्तान ला कर भारत में नूरजहां की खातिर तव्वाजे बदला चुकाना चाहते थे साथ ही वे देनों शों के सांस्कृतिक संबंध बढ़ाना चाहते थे। न्तु जनरल जिया ने उनकी इस प्रार्थना को ह कह कर ठुकरा दिया की लड़कियों का ना और नाचना इस्लामिक पाकिस्तान के र तरीके के ख़िलाफ़ है।

परन्तु जनरल साहब को इस बात का वश्य ही ज्ञान होना चाहिये कि पाकिस्तान सबसे बड़ा व्यापार आज भारतीय फिल्मों वीडियो कैसेट्स की तसकरी है। ये किस्तान में खुले आम तीन-तीन सौ रुपये बेचे जाते हैं। वे इस बारे में क्या करने ले हैं?

बई के शैरीफ का पीना पिलाना, चना गाना—

शैरीफ सुनील दत्त राष्ट्रपति रीगन द्वारा हाइट हाउस में इंदिरा गांधी के सम्मान में गई पार्टी में मस्त हो उठे। वे वहां क्या र रहे थे? हां, वे वहां विशेष अतिथि थे और उन्होंने खूब शेम्पेन पी और नाचने में स्त हो गये। जब नशा और अधिक बढ़ या तो उन्हेंने राष्ट्रपति रीगन से उनके यौवन राज जा पूछा! इस पर राष्ट्रपति ने म्भीरतापर्वक उत्तर दिया 'कभी भी अपनी न्म तिथि की ओर ध्यान न दो तथा कभी सोचो तुमने क्या खो दिया है केवल अपने गे देखो और सोचो तुम कितने भाग्यवान्'। आशा है वे अपने घर में पहुंच कर पने हवा में बंदूक घुमाते पुत्र के कानों में यही शब्द दोहरा पायेंगे!

राजेन्द्रनाथ

क्या आप जानते हैं कि शानदार 'कफ परेड बिल्डिंग' में राजेन्द्रनाथ का एक बहुत बढ़िया पेन्ट हाउस है साथ ही उन्हें उसकी विशाल छत के प्रयोग का भी हक है। कुछ दिन पहले उन्होंने मुझे बीयर और शाकाहारी भोजन की दावत दी और मुझे छत पर ले गये।

'चांदनी रातों में तो यहां बहुत ही सुन्दर लगता होगा", मैंने कहा।

'तुम देख तो रहे हो मैं यहां ताला लगा कर रखता हूं, मुझे चांदनी रात से बहुत डर लगता है, चांदनी रात अंधेरी रातों से भी ज्यादा खतरनाक होती है। चांदनी से मेरे मन में एक अजीब सम्मोहन पैदा हो जाता है जिससे मेरा मन १९वीं मंजिल की छत से कूदने का करता है, उन्होंने ताले की ओर इशारा कर कहा। लगता है अपने दीवाने भाई प्रेमनाथ की कुछ विशेषताएं ग्रहण कर ली हैं।

मालिनी को 'हूट' किया गया!

हेमा मालिनी 'नृत्य संध्या' प्रोग्राम टाटा थियेटर में नृत्य दिखा रही थीं जब कि जनता ने उन्हें हूट करना शुरू कर दिया। चारों ओर से उनका मजाक उड़ाया जा रहा था। कुछ ही देर में वे अपना धीरज खो बैठीं और उन्होंने कहा भारतीय लोगों को नृत्य के विषय में कुछ भी मालूम नहीं वे ऐसे प्रोगामों में केवल फैशन के लिये आते हैं। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत थी देखने वालों में बहुत ही उत्साह बढ़ाने वाले तथा प्रशंसा करने वाले लोग थे और यही कारण था कि उन्हें हेमा का प्रोग्राम के लिये घंटा भर देर से आना बहुत बुरा लगा था। हेमा को स्वयं यह समझना चाहिये कि यह एक सांस्कृतिक कार्यक्रम है और इस थियेटर के दर्शक बिना विद्रोह हेमा के फिल्मी नखरे नहीं सहेंगे.

श्री देवी वापिस आ रही है।

दक्षिण भारत की सुन्दरी श्रीदेवी जिन्होंने हिन्दी फिल्म 'सोलवां साल' में असफल अभिनय किया था और इस कारण हिन्दी फिल्मों से तुरन्त पीछे हट गई थीं. दोबारा हिन्दी फिल्मों में आने की तैयारी कर रही हैं। जैसे की कहावत है दूध का जला छाछ को फूंक-फूंककर पीता है, इस बार वे अपने हिन्दी फिल्म में अभिनय करने का अधिक प्रचार नहीं कर रहीं। आज यह तारिका तेलगू फिल्मों में सबसे अधिक लोकप्रिय तथा बिकने वाली अभिनेत्री हैं। और हर बार एन. टी. रामा राव के साथ काम करने पर इनका भाव अधिक होता जा रहा है। इसके इलावा श्री देवी ही एक ऐसी अभिनेत्री है जिसे कृष्ण या शोभन बाबू के साथ काम करने में कोई एतराज नहीं है।

'मूनराम पिराई' में अभिनय करने के बाद इनकी शोहरत इतनी बढ़ गई है कि सरीथा की नीद हराम हो गई। अब सरीथा के नम्बर एक अभिनेत्री होने का चैलेंज किया जा रहा है। बेचारी सरीथा। जबकी 'एक दूजे के लिये' की मूल फिल्म 'मारो चरित्र' में अभिनय करने वाले सभी हिन्दी फिल्मों में प्रवेश पा गये हैं, 'सरीथा' का सपना अभी सपना ही है!

हमारे प्यारे शिकवा साहब

मूलः कन्हैयालाल कपूर

एक आम आदमी घर को घर और दफ्तर को दफ्तर समझता है। उनमें से एक हमारे दोस्त शिकवा साहब नहीं है। उम्र पचास साल। बदन इकहरा। सिर के बाल खिचड़ी, छोटी-छोटी मूंछें । उन्हें देख कर किसी सर्कस के जोकर की याद ताजा हो जाती है, हालांकि वह जोकर नहीं, डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में क्लर्क हैं। वे जब दफ्तर से घर लौटते हैं तो सिर्फ फाइलों ही से लदे-फदे नहीं होते, पर दफ्तरी वातावरण उनके साथ ही होता है। प्रायः घरेलू वार्तालाप में दफ्तरी भाषा का उपयोग करने लगते हैं। बेगम पूंछती है— ''हमने एक नई साड़ी की मांग की थी। उसका क्या हुआ?''

वे कहते —''आपकी फरमाइश विचाराधीन अर्थात् अंडर कनसिड्रेशन है।''

''मैंने जेबखर्च में वृद्धि करने के लिए कहा था।''

''उसकी दरख्वास्त दाखिले दफ्तर कर दी गई है। बजट में कोई गुंजाईश नहीं है।''

शिकवा साहब को अपने दफ्तर के सिवा किसी चीज में दिलचस्पी नहीं। ताश और शतरंज से उन्हें नफरत है। अध्ययन को वह समय नष्ट करना समझते हैं। सिनेमा इसलिए नहीं देखते कि उनकी नेत्र ज्योति कमजोर है। और कुछ ऊंचा भी सुनते हैं। ले देकर एक दफ्तर है, जो सदा उनके दिल दिमाग पर सवार रहता है। बकौल गालिब—

खिंजा क्या, फसले गुल,
कहते है किसको, कोई मौसम हो,
वही हम हैं, कफस है,
और मातम बालों पर का है।

उनसे किसी विषय पर बात की जाए, वे उसका रुख दफ्तर की ओर फेर देते हैं, और फिर जैसे शिकायतों का दफ्तर खुल जाता है। सबसे ज्यादा रोना वह अपने सुपरिंटेंडेंट का रोते हैं—

'साहब! अजीब शख्स से पाला पड़ा है। बात-बात पर काटने को दौड़ता है। जरा सी गलती हो जाए पंजे झाड़ कर पीछे पड़ जाता है। कल हम दफ्तर में जरा देर से पहुंचे। रास्ते में आगा साहब मिल गए थे। यूं ही कुशलता पूछने के लिए दो एक मिनट ठहर गए। जब अपने कमरे में कदम रखा, चपरासी ने सूचित किया कि साहब आपको याद कर रहे हैं। 'जल तू जलाल तू' का मंत्र पढ़ते हुए उनके ऑफिस में दाखिल हुए। उन्होंने गरज कर कहा—

''आप हमेशा लेट आते हैं। कारण बयान कीजिए। आपके खिलाफ एक्शन क्यों न लिया जाए?

हमने बेहद विनम्रता के साथ निवेदन किया—

''जनाब! आज पांच-मिनट लेट हो गए, वरना हम हमेशा दस पन्द्रह मिनट पहले आया करते हैं।''

मेज पर मुक्का मारते हुए वे बोले—

''आप गलत-बयानी से काम ले रहे हैं। हम तीन हफ्तों से देख रहे हैं। आप रोजाना लेट आते हैं। लेट आना आपकी आदत बन चुकी है।''

जी में आया, उनसे कहा जाए—'' और ख्वाहमख्वाह मातहतों को परेशान आपका शौक बन गया है'' लेकिन इसी में समझी कि चुप रहें। उन्हों नादिरशाही फैसला सुनाते हुए 'भविष्य में लेट आए तो उस तनख्वाह काट ली जाएगी।''

हम लहू के घूंट पीकर रह गये कमरे में आए। अभी उन्हें मन-ही अच्छी तरह कोस भी न पाए थे कि बुलावा फिर आ गया। डरते-डरते हुए। उन्होंने एक कागज की ओ करते हुए पूछा—''इन रकमों आपने लगाया है.''

'जी हां!''

''इसमें पन्द्रह पैसों की गलती

'जल्दी में हो गई होगी।''

''क्या मतलब? आप सोच स जोड़ क्यों नहीं लगाते?''

''कभी कभार सावधानी के गलती . . .''

''यह अच्छी सावधानी है। एक पन्द्रह पैसे . . .''

''लाइए, इसे ठीक कर दते हैं''

''अगर उच्चाधिकारियों की नजर पड़ जाती तो . . .''

'मामूली गलती है। इसका कोई न लिया जाता।''

''आपके लिए हर गलती मामू करती है। पिछले माह भी जोड़ गलती निकली थी। याद है आपको

''वह तो सिर्फ तीन पैसों की थी।''

'गलती आखिर गलती है। तीन या तीस पैसों की। आइन्दा होश से

मदहोश
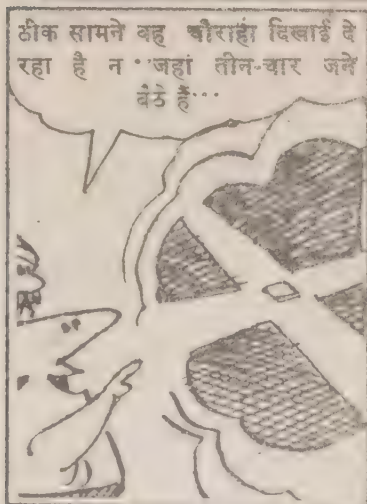
गाया कीजिए। नहीं तो सख्त नोटिस लिया ाएगा।''

इस दूसरी भर्त्सना ने हमें बिल्कुल झंझोड़ दया। हम सोचने लगे—''यह अफसर है ा बिना बुलाई मुसीबत। हफ्ता पन्द्रह दिन जोड़ में एकाध गलती निकल आयी तो ौन सा गजब हो गया। आखिर क्लर्क कोई म्प्यूटर तो नहीं होता।''

हम शिकवा साहब से रस्मी सहानुभूति ताते हैं,'' छोड़िए शिकवा साहब। दफ्तरों ऐसी बातें होती ही रहती हैं।'' बस, वह ुपरिंटेंडेंट को छोड़ कर हमारे पीछे पड़ जाते ।

''आपकी राय में यह मामूली बातें हैं? ापका इस किस्म के अफ़सर से पाला नहीं ड़ा। इसलिए उसकी तरफदारी कर रहे हैं।''

''हम उसकी तरफदारी नहीं कर रहे। ापसे विषय बदलने के लिये निवेदन कर ह हैं।''

''आप विषय बदलना चाहते हैं, तो ीजिए हमारे दफ्तर में दो क्लर्क हैं ...' शिकवा साहब बोले।

''फिर वही दफ्तर की बात?''

''देखिए साहब, हमने विषय बदल दया।अब आपको यह किस्सा सुनना ही ड़ेगा।

हम बेदिली से कहते हैं—''सुनाइए।''

''साहब! यह दोनों क्लर्क आफ़त के रकाले हैं। शैतान भी उनसे पनाह मांगता । उन्होंने साजिश कर रखी है कि हमें लील ख्वार करके ही दम लेंगे। हर समय ाहब के कान भरते रहते हैं— ''शिकवा ाहब दफ्तर से स्टेशनरी चुरा कर घर ले ाते हैं! शिकवा साहब समय से पहले घर चले जाते हैं। पिछले दिनों तो उन्होंने हद ही कर दी। आप सुन रहे हैं न! ऊंघ तो नहीं रहे?''

''जी हां! बड़े शौक से सुन रहा हूं।''

''बात यह हुई, एक दिन हमने साहब की टाईपिस्ट से एक हल्का सा मजाक किया। किसी तरह इसकी भनक पड़ गई, फौरन उस महिला के पास पहुंचे। उसे बहकाया कि वह हमारे खिलाफ एक शिकायत साहब को लिख कर दे। जब उसने आना कानी की तो उसे डराया कि वह बदनाम हो जायेगी। मजबूर हो कर उसने उनकी बात मान ली। साहब को तो ऐसा अवसर खुदा दे। उन्होंने हमें बरखास्त करने

की धमकी दी। हम बहुत घबराए। उस महिला की मिन्नत समाजत की और बहुत कठिनाई से उसे अपनी शिकायत वापस लेने पर राजी किया। तो मुलाहिजा फरमाइये। आपने इन शैतानों की कारस्तानी ?''

''अच्छा शिकवा साहब! अब दफ्तर की काफी बातें कर चुकें। कोई और बात कीजिए। देखिए, मौसम कितना खुशगवार है।''

''खाक खुशगवार है! जिस कमरे में हम बैठते हैं, वहां पंखा नहीं है। कई बार साहब से कह चुके हैं, लेकिन वह एक नहीं सुनते।''

हम शिकवा साहब का ध्यान दफ्तर से हटाने के लिए कहते हैं 'हमारे देश ने आजादी के बाद काफी उन्नति की है। आपका क्या विचार है

वे बहुत अरुचि से जवाब देते हैं—''आप कहते हैं तो अवश्य उन्नति की होगी लेकिन हमें इससे क्या लेना देना? हमारी वार्षिक उन्नति तो तीन साल से रुकी हुई है! कई बार लिख चुके हैं, सुनवाई ही नहीं हुई।''

यह समझते हुए कि तीर चूक गया, इस बार हम रेस के घोड़ों का जिक्र करते हैं। वे इस विषय से भी एक नया पहलू निकाल लेते हैं— ''अजी साहब! आजकल गधा घोड़ा एक भाव हैं। शर्मा साहब! आप एफ. ए. और बी. ए हैं, लेकिन हम दोनों को एक ही ग्रेड दिया गया है। सच तो यह है कि इससे पहले जो सुपरिंटेंडेंट हुआ करते थे, हमारे कद्रदान थे, लेकिन अब तो घोड़े गये, गधों का राज आया।''

उनकी बातों की ताब न लाकर हम कहते हैं. ''अच्छा, अब इजाजत दीजिए! फिर कभी उपस्थित होंगे!''

वे हमारा दामन थाम कर फरमाते हैं—''चलते-चलते उस घटना की कहानी तो सुनते ही जाइए जो आज हमारे दफ्तर में हुई है।''

और इससे पहले कि वे हमें एक बार फिर दफ्तर की दुनिया में ले चलें, हम खिड़की से छलांग लगा कर रंगो बू की दुनिया में आ जाते हैं और सोचते हैं, मीर ने जब यह शेर कहा था तो उसका संकेत शिकवा साहब की ओर ही था—

याद उनकी इतनी खूब नहीं मीर बाज आ,
नादान फिर वह जी से भुलाया न जायेगा।

अनु: तरनजीत

एशियाई खेलों का दिल्ली वासियों पर प्रभाव

एशियाई खेल होंगे और समाप्त भी हो जायेंगे, लेकिन दिल्ली वालों पर तो वह कुछ न कुछ छाप छोड़ जायेंगे। लोगों के व्यवहार में परिवर्तन होगा। दिल्ली पहले वाली दिल्ली नजर नहीं आयेगी। क्या-क्या नये नजारे देखने को मिल सकते हैं—

इस पर एक रिपोर्ट।

दिल्ली के होटल व टैक्सी वाले विदेशों से आये लोगों के कपड़े तक उतार लेंगे बाद में उन्हें अपना सामान बेचकर जाना पड़ेगा। दूरबीन वगैरह सस्ते मिलेंगे। दूर-दूर तक के रंगीन नजारे देखने का लोगों को ज्यादा चांस मिलेगा।
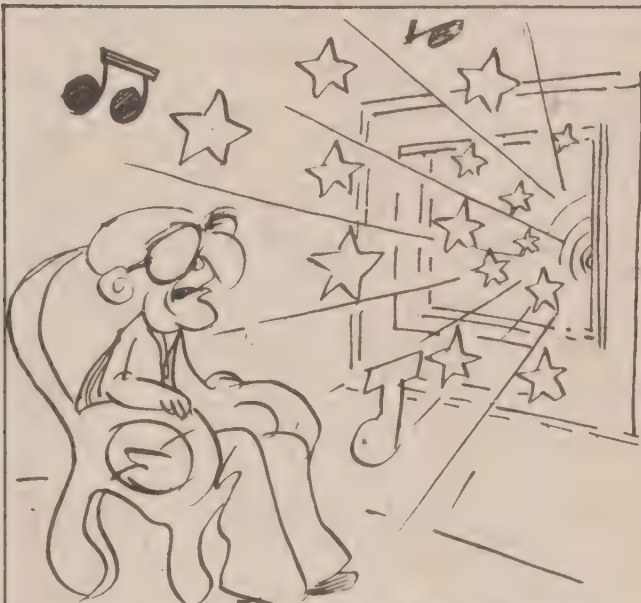
पॉप म्यूजिक का शोर भी बढ़ जायेगा, विदेशों से आये दर्शक अपने टू इन वन औने-पौने दामों पर बेच कर जायेंगे।

लड़कियों को पोज देने के अधिक अवसर मिलेंगे। जापान से आये टूरिस्ट कैमरे बेच जायेंगे या उनसे उठाईगीर छीन लेंगे और सस्ते बेच देंगे।

टी० वी० पर सुडौल शरीर वाले खिलाड़ियों को देख-देखकर तोंदियल लोगों को अपने आप पर शर्म आयेगी। दूसरों की हेय दृष्टि का भी सामना करना पड़ेगा।

सब्जियां कम मिलने के कारण लड़कियों के गालों पर से लाली कम हो जायेगी व लड़के उन्हें सुनाने के लिए 'लाल लाल गाल' वाले गाने का प्रयोग पहले जितना न कर पायेंगे।

...लों के दौरान सब्जियां तो महंगी होंगी ही। अतः गृह-
...यों के सब्जी वालों से तकरारों के कारण सम्बन्ध
बिगड़ जायेंगे।

जब नाटे कद के चीनी, जापानी व कोरियाई खिलाड़ी सर्वाधिक मेडल जीत ले जायेंगे तो नाटे लोग मजाक के पात्र नहीं रहेंगे। लड़कियां अपने नाटे प्रेमियों की भी इज्जत करने लगेंगी।

...ब्जियों की कमी के कारण दालों की खपत बढ़ेगी, गृहणियों
...दालें पतली बनाने की आदत पड़ जायेगी। दिल्ली के
घरों में गोतामार दालें मिलेंगी।
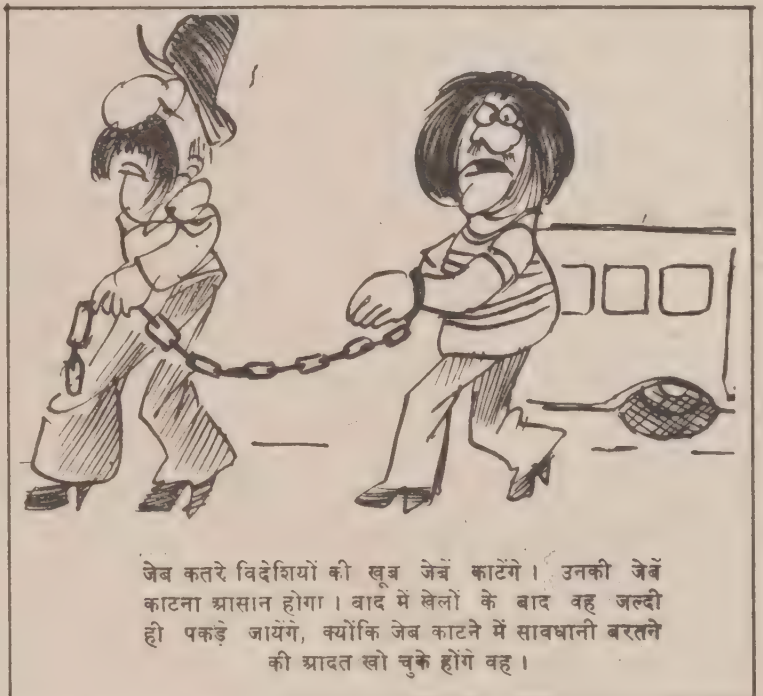
जेब कतरे विदेशियों की खूब जेबें काटेंगे। उनकी जेबें काटना आसान होगा। बाद में खेलों के बाद वह जल्दी ही पकड़े जायेंगे, क्योंकि जेब काटने में सावधानी बरतने की आदत खो चुके होंगे वह।

टैक्सी व स्कूटर ड्राइवर विदेशी लोगों से अधिक किराया लूट-लूटकर इतने खूंखार हो जायेंगे कि बाद में लोकल सवारियों को वह ऐसे देखेंगे—जैसे मच्छर को देख रहा हो।

खेलों के दौरान अंडे महंगे हो जायेंगे। अंडों का भाव बढ़ेगा। मनोवैज्ञानिक असर ऐसा होगा कि जब स्कूल से बच्चा परीक्षा में अन्डा प्राप्त कर घर जायेगा तो एक बारगी तो मां-बाप खिल उठेंगे।

हंसना मना है

मुझे तुम्हारे दिल की आवाज़ अच्छी नहीं लग रही, ''मैं तुम्हें बता सकता हूं कि तुम्हें ऐंन्जाईनापिक्टोरिया से कुछ समस्या रही होगी।''

''डाक्टर साहब आप कुछ हद तक ठीक कहते हैं पर यह उसका नाम नहीं था'' ''रोगी ने उत्तर दिया!

●

एक अध्यापक एक छोटे लड़के को डांट रहे थे, ''क्या तुम जानते हो झूठ बोलने वाले लड़कों का क्या होता है?''
लड़के ने उत्तर दिया, ''हां, वे बसों में आधे टिकट पर सफर करते हैं।''

●

एक लड़की बी. ए. पास कर लेने पर अपनी एक अपने से बड़ी सहेली से सलाह लेने गई। बड़ी सहेली मे सलाह दी ''अच्छा, प्रिय बात ऐसे है—तुम्हें काम पाने के लिये बुद्धिमती और पति पाने को बुद्धु दिखाई देना होगा।

●

एक राजनीतिक वक्ता ने कहा, ''न ही उसने दायें देखा न बायें देखा पर सीधा एक लक्ष्य लिये सीधा आगे बढ़ता चला गया। उसे दोस्त या दुश्मन कोई भी रोक न सका, न ही कोई उसे अपने रास्ते से हटा सका। जो कोई भी उसकी राह में आया अपनी ही जान हाथ में ले कर आया। तुम ऐसे व्यक्ति को क्या कहोगे?''
''एक ट्रक ड्राईवर'' पीछे से कोई चिल्लाया।

●

एक युवक बी. ए. पास करने के बाद एक फैक्ट्री में गया और द्वार पर खड़े चपरासी से पूछा, ''क्यों, भाई, बी.ए. पास के लिये कोई जगह है यहां?'' ''अभी तो नहीं है, हां, कल तक शायद हो जाये, क्योंकि अगर मैनेजर ने मेरी तनख्वाह नहीं बढ़ाई तो मैं कल इस्तीफा दे दूंगा,'' चपरासी ने कहा।

●

पत्नी ने पति को समझाते हुए कहा, देखो जी, तुम्हारा दोस्त जिस लड़की से शादी करना चाहता है, वह लड़की अच्छी नहीं है, तुम अपने दोस्त को मना क्यों नहीं करते?''
पति—मैं क्यों रोकूं? उसने ही मुझे ही कब रोका था।

●

कपड़ों के विक्रेता मेरे एक मित्र ने एक नवयुवक को कोडराई की एक जैकेट बेची, नवयुवक जैकेट खरीद बेहद खुश था।
एक सप्ताह बाद नवयुवक ने दुकान पर वापिस आ जैकेट लौटा दी। ''मेरी गर्ल फ्रेन्ड को अच्छी नहीं लगी''।

अगले ही सप्ताह फिर वही नवयुवक दुकान पर आया और उस ने वही जैकेट फिर से खरीद ली। ''क्यूं क्या तुम्हारी गर्ल फ्रेन्ड ने अपना विचार बदल लिया?''
''नहीं! मैंने गर्ल फ्रेन्ड बदल ली''!

●

हमारे गांव में टूर करता एक विक्रेता एक खास ब्राण्ड की खाद बेचने का प्रयास कर रहा था। उसने अपने माल की तारीफ के बाद पांच किलो खाद के पैकेट पर १० प्रतिशत की छूट देने का वादा किया और १० किलो के पैकेट पर २५ प्रतिशत की छूट थी। ''वास्तव में यदि तुम २० किलो की बोरी खरीदो तो आप को केवल आधे ही दाम देने पड़ेंगे,'' वह बोला।
एक बुजुर्ग किसान जो उसकी सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था बोला, ''और श्रीमान् १०० प्रतिशत छूट के लिये कितनी खाद खरीदनी होगी''?

●

हमारे दफ्तर में काम करने वाली एक लड़की का फोन आया, उसने फोन उठा कर यह कह कर बन्द कर दिया, ''अभी तो हमारा काफी ब्रेक' है, मैं बाद में बात करूंगी।'''

●

एक प्रशन्सक ने चर्चिल से पूछा—क्या आप को खुशी नहीं होती यह देख कर कि हर बार आप के भाषण के लिये हाल खचाखच भरा होता है।
''खुश होने की बात तो है—चर्चिल ने सहमति दिखाते हुए कहा ''परन्तु मुझे इस बात का सदा ध्यान रहता है कि मेरे भाषण के स्थान पर, यदि मुझे फांसी लग रही होती तो भीड़ इससे तिगुनी होती।''

●

एक लड़के ने अपनी मां को बताया कि वे लोग चर्चिल द्वारा लिखित अंग्रेजी बोल… का इतिहास पढ़ रहे हैं ''हममें से कुछ… पत्र लिखने वाले हैं'' वह बोला:
''मुझे विश्वास है विंसटन चर्चिल इस… प्रसन्न होंगे'' मां ने उत्तर दिया।
''कह नहीं सकते, लड़का बोला'' … उनसे और किताबें न लिखने के लिये क…

●

छः वर्षीय अमित जोर जोर से रोता हुअ…
''क्या बात है?'' मां ने पूछा.
''पापा तस्वीर टांग रहे थे तो हथौड़… अंगूठे पर लग गई''
'यह ऐसी क्या घबराने की बात है'… दिलासा देते हुए कहा ''तुम जैसे बड़े… को ऐसी छोटी सी बात पर थोड़े ही रोना… तुम हंस ही क्यों नहीं पड़े?'' ''मैं हंस… था,'' अमित सुबका!

●

पत्नी—समाचार पत्र पढ़ते पति से ''अ… को अह-हां कहने का कष्ट करने की अ… कता नहीं है ''मैं पांच मिनट पहले ही… बन्द कर चुकी हूं''।

●

एक पर्यटक ने पूछा, ''यहां कोई बड़े… पैदा हुए हैं?''
''नहीं!'' आदिवासी ने उत्तर दिया ''… ज्यादा से ज्यादा बच्चे ही पैदा हो पाते हैं,… शहर में फर्क होगा''।

●

गाना सीखने के इच्छुक ने अपना पा… किया— ''प्रोफैसर'' क्या आप सोचते… अपनी आवाज़ से कुछ कर पाऊंगी'… ''हां'', प्रोफेसर ने उत्तर दिया ''कहीं… लगने के समय इसका अच्छा उपयो… सकता है''।

●

दी

एक लघु कथा

घोषणा-अमल

—आज़ाद रामपुरी

''लाओ पचास रुपये!'' मंत्री महोदय द्वारा फ्री में सौ रुपये के कपड़े गरीब जनता में वितरित किये जाने की घोषणा के अनुरूप कपड़े वितरित करने वाले अधिकारी ने सामने खड़े फटे हाल मनसुखा से कहा तो मनसुखा गिड़गिड़ाया...

''बाबू जी पचास रुपये कहां—एक रुपये का कागज खरीदा, पांच रुपये एप्लीकेशन लिखाने के दिये, दस रुपये एप्लीकेशन लेने वाले मुंशी ने हड़प लिये, और बीस रुपये एप्लीकेशन को तुम्हारे तक पहुंचाने के ले लिये।अब केवल दस रु मेरे पास हैं जिनसे मुझे अपने गांव को वापिस लौटना है। यदि ये रुपये भी मैंने तुम्हें दे दिये तो मेरे पास बस के किराये के लिये एक नया पैसा भी नहीं बचेगा।'' मनसुखा जब एक श्वास में ही ये सब कुछ कह गया तो अधिकारी गुर्राते हुये बोला—

यह सब तो ठीक है—मुझे तुम्हारे दस रुपयों से कुछ लेना-देना नहीं है—मुझे तो पचास रुपये चाहिये, पचास, समझे।''

''लैकिन हुजूर,''

लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, समझे कि नहीं!

अधिकारी ने तेवर बदलते हुये कहा तो मनसुखा ने रहा-सहा साहस बटोर कर बहुत देर से दबाई गई बात को उगल ही दिया—

''लेकिन मंत्री जी ने तो ये कपड़े फ्री में बांटे जाने की घोषणा की थी''

''तो फिर मंत्री जी से ही ले लो''

यह सुनते ही अधिकारी ने अपने चेहरे पर उपेक्षा से मनुसुखा की एप्लीकेशन रद्दी की टोकरी में डालते हुये कहा—

''तो फिर मंत्री जी से ही ले लो।''

दीवाना के अंक 17 में प्रकाशित
चित्र वर्ग पहेली का सही हल

जलावतरण—मक्खनबाजी
बोरियत—मिलवाइये
सही हल—बोलबाला
विजेता (निर्णय लाटरी द्वारा)
कुक्कू बिन्दरा
56, विरेन्द्र नगर, जेल रोड, नई दिल्ली-110058

दीवाना-कमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० 25 का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—इन्द्रजीत ग्रोवर—जालन्धर शहर।
द्वितीय पुरस्कार—संजय कुमार चोपड़ा—दिल्ली
तृतीय पुरस्कार—मुनीष शिवचन्द केडिया—अमरावती

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

रविन्द्र नाथ गोस्वामी, सीतामढ़ी
अशोक भाटिया, नई दिल्ली
गोपाल प्रसाद अग्रवाल, कलकत्ता
सुनील कुमार गुप्ता, सतना
संजीव जैन, बेली हावड़ा

सर्टीफिकेट

उपासना कपूर, दिल्ली
अमित कुमार सिन्हा, पटना
मनीष गुप्ता, कानपुर
वीनू गोखल, मेरठ
रूप प्रसाद, कलकत्ता
संजीव ए वालस, बन्दे
त्रिपुरी शर्मा, जयरर
जगजीत कौर, लुधियाना
हरबिन्दर सिंह, दिल्ली
अमित सेठ, दिल्ली

चित्र वर्ग पहेली
१० रु. इनाम जीतिये

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बायीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

एक गुंडा सोते सिपाही की मूंछ काट ले गया। पर शर्म की बात इसलिए भी थी क्योंकि घटना उसकी…हुई।

ाधीलट ारकल

नका य मान

ामकरइानरा

कसतच

योकतनाम

सही उत्तर :—

अन्तिम तिथि— १५-११-८२

नाम ————————

पता ————————

पूरनलाल तियानी, सी-112, मुल्तानीढांडा, पहाड़गंज दिल्ली, 21 वर्ष, दोस्ती करना।

कृष्णलाल सपरा, गांधी नगर, दिल्ली, 19 वर्ष, गाने सुनना, दीवाना पढ़ना।

ओम प्रकाश जैन, गोपीनाथ बाजार, दिल्ली कैंट, 26 वर्ष, टाइप करना, फिल्म देखना।

अशोक खुराना, ए-56, बड़ा पन्ना, कलानौर, (रोहतक), 24 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

मास्टर ब्रह्मानन्द चौधरी, म.न. 270, आर. के. पुरम नईदिल्ली, 14 वर्ष. कहानी, कविता पढ़ना।

विनोद कुमार, 1-20, गोपाल नगर, सहारनपुर, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

राकेश कुमार, बाग गुलजार ... पढ़ना-लिखना ...

समरपाल सिंह चौधरी, गोविंद पुरी, नई दिल्ली, 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना, खेलना-कूदना।

विनोद कुमार जैन, 21, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली, 19 वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना।

प्रमोद कुमार भक्त, म. नं. 47 बस्ती गुजाँ जालन्धर, 15 वर्ष, पेन्टिंग करना, दीवाना पढ़ना।

अजय माहेश्वरी 'प्रेम सदन' कासगंज, 15 वर्ष, क्रिकेट व बैड मिन्टन खेलना।

ए-म/49, नरेश कुमार, जे-बी 4/78, सीलमपुर, दिल्ली, 14 वर्ष, साईकल चलाना।

सुशील कुमार जैन, गंगा शहर रोड, बीकानेर, (राज०), 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

बृज मोहन, जलालाबाद, ... लिखना, दो...

राजकुमार खुराना, महेन्द्र पान स्टोर चौक, सब्जी मंडी लुधियाना, 22 वर्ष, फरमाईश।

अजय नागपाल म. नं. 1101/2 चौला कुआं, हांसी, (हिसार), 16 वर्ष, रेडियो सुनना।

कमल पुष्प, 768, शास्त्री नगर, पटना, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता, बैड मिन्टन खेलना।

डा. राजेश गोयल, औरंगाबाद, 24 वर्ष, कविता लिखना व चित्रकारिता करना।

गोविन्द सिंह (एप्वाइंटमेंट आ. सी.सी. आफीसर, 60/11 सफेद कालोनी, कानपुर, 14 वर्ष।

नरेश कुमार अग्रवाल, काटाबाजी, बलागीर, उड़ीसा, 19 वर्ष, दीवाना पढ़ना, खेलना।

हेमन्त कुमार, नैनीताल, 22 ... से बोला ...

सुभाष मिश्रा 'मनजीत' हुसेनी गली, बदायूं, 19 वर्ष, दूसरों का मन जीतना।

हरीश कुमार 'रोमू' सरगोधा पान भण्डार. शाहाबाद (एम), 18 वर्ष, दोस्ती करना।

राजकुमार शील, 5-ए, ओल्ड अनारकली, दिल्ली-51, 17 वर्ष, गाने गाना।

सुनील रामपाल, 213 नगर, नई दिल्ली, टकलों को छेड़ना।

चन्द्रशेखर अजीत मंसूरगंज, पटना सिटी पटना, 19 वर्ष, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना।

देवीदास बेलाणी, जीवनराम, चंटाघर, 14 वर्ष, क्रिकेट खेलना।

करमचंद राजेश महेन्द्रु, मन्दसौर, पार्क, नई दिल्ली, पढ़ना-लिखना।

अमरजीत सिंह 'अम्पी' 181, भारद्वाजी, शाहजहांपुर, 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

परमेश्वर दनलाटा, नई मण्डी, नोहर, 14 वर्ष, दीवाना पढ़ना व दोस्ती करना।

धर्मदास वाधवानी मधुर रे. ओ. संघ, कटियापारा, विलासपुर, 29 वर्ष, पत्र-मित्रता।

योगेश छोटरानी द्वारा डिल्ली बाजार, अमीरपुर, (राज०), 16 वर्ष, पिक्चरें देखना।

महेश कुमार, खिड़की मौहल्ला ग्वालियर, 16 वर्ष, ख्वाब देखना, दोस्ती करना।

दीपक मोंगा, पुत्र श्री राज मोंगा, सोडावाटर फैक्ट्री, धर्मकोट, 19 वर्ष, खेलना।

अशोक कुमार वार्ड, महावीर ... 16 वर्ष, पत्र-मि...

मधुकर निलकंठराव जूटे, देवपुर, धुलिया, (महा), 18 वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।

संजय गुप्ता, 96, रेलवे रोड, हापुड़, पत्र-मित्रता करना।

राधापुरी, 17 वर्ष,

वेद प्रकाश, 5 नं० ब्लाक 166 नं० प्लाट त्रिलोकपुरी, 20 वर्ष दीवाना पढ़ना, खेलना।

राजीव कलानी, शिवाजी डेयरी गांधी गेट महौल, नागपुर, 17 वर्ष, नफरत करना।

सुभाष अग्रवाल, चंद्रसेन अग्रवाल, बिसरा रोड, राउरकेला, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ

नाम ——————————

पता ——————————

——————————

आयु ———— शौक ————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता
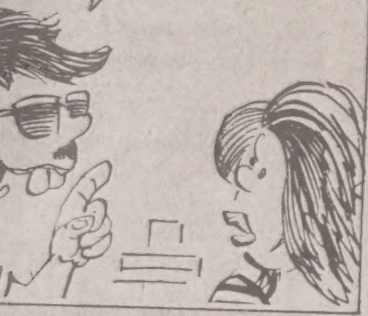
दीवाना चिपकी

यह शांति क्षेत्र है

यहां लड़कियों मे आंखें लड़ाना मना है।

दीवाना

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82

मेले से घर जाते हुए, राम और श्याम
को मिले दो बच्चे रोते हुए.

इसीलिये, पॉपिन्स गप करने के पहले, ज़रा देख कर तसल्ली कर लो, कि वे असली ही हों.

रंगबिरंगे पैक पर
रुपहली धारियाँ देख कर
तसल्ली कर लो.
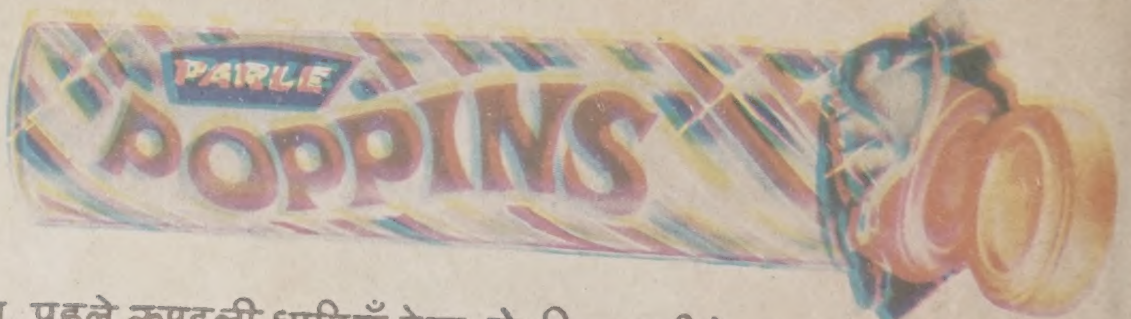
पारले पॉपिन्स. पहले रुपहली धारियाँ देख लो, फिर रसीले स्वाद का मज़ा लो।
अब नक्कालों की चाल नहीं चलेगी.